

# भोपावर तीर्थ का संक्षिप्त इतिहास



प्रकाशक :

**श्री शांतिनाथ जैन श्वे. मन्दिर ट्रस्ट**

भोपावर, तह. सरदारपुर (धार) म.प्र. 454 111

फोन : 07296-266830, 266861, 266897

फेक्स : 07296 266863 मो. : 94250-46397



ऐसी कायोत्सर्ग मुद्रावाली खड़ी श्री शान्तिनाथ प्रभु की दुनिया कि एक मात्र प्रतिमा भोपावर मे ही विद्यमान है ।

# भोपावर तीर्थ का संक्षिप्त इतिहास



\* आशीर्विदाता \*

मालव भूषण आचार्यदेव

श्री नवरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा.

\* प्रेरणा स्रोत \*

गणिवर्य श्री विश्वरत्न सागरजी म.सा.

\* विशेष सहयोगी \*

श्री रामणभाई जैन "भोन्टेक्स ग्रुप" मुम्बई

\* कार्य संचालक \*

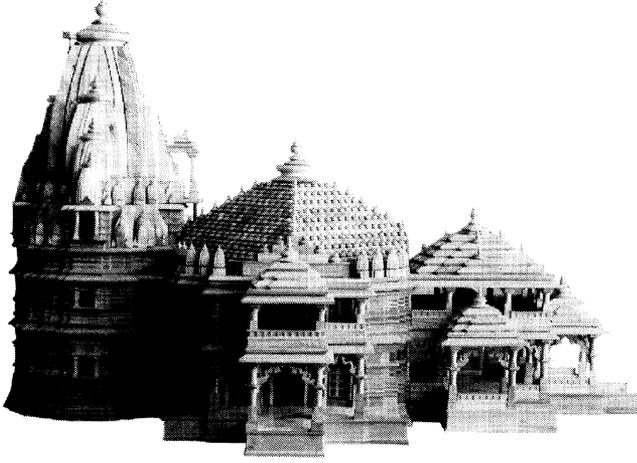
श्री सुटेन्द्रकुमार राजमलजी जैन , धार

\* लेखक \*

यशवंत चौहान "राष्ट्रीय ओज कवि"

बी.एस-सी.-गणित, एम.ए.-हिन्दी साहित्य, अर्थशास्त्र

# भोपावर तीर्थ का संक्षिप्त इतिहास



भोपावर तीर्थ का संक्षिप्त इतिहास

नवम् संस्करण : 5,000 प्रतियां

लेखक : यशवंत चौहान

प्रकाशक :

श्री शांतिनाथ जैन श्वे. मन्दिर ट्रस्ट

भोपावर, तह. सरदारपुर (धार) म.प्र. 454 111

फोन : 07296 266830, 266861, 266897

फेक्स : 07296 266863 मो. : 94250 46397

मुद्रक : कंचन ऑफिक्स

1, जवाहर मार्ग, राजगढ़

 07296 : 235409-10

मूल्य : तीक्ष्ण रूपया मात्र

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

\* ट्रस्ट मॉडल \*

.. अध्यक्ष ..

पुष्पसेनभाई पी.जवेरी, मुम्बई

मो. 098201 09478

.. चेयरमेन ..

रमणभाई जैन (मोण्टेक्स पेन), मुम्बई

मो. 098200 35141

.. सचिव ..

सुरेन्द्रकुमार राजमलजी जैन, धार

मो. 094250 46397

मो. 07292 358877

.. ट्रस्टी ..

डॉ.प्रकाश बांगानी, इन्दौर

डॉ.प्रकाश आर.जैन, इन्दौर

संजय बी.जैन, राजगढ़

अरविन्द एच.जैन, राजगढ़

मनोहर बी.जैन, राजगढ़

शान्तीलाल एस.जैन, राजगढ़

सुमेरमलजी के.सदानी, बैंगलोर

शान्तीलाल बी.जैन, राजगढ़

## \* अनुक्रम \*

1. नवकार महामंत्र ...1
2. प्रकाशक्रीय ...2
3. पृष्ठभूमि ...3
4. आशिवचन ...5
5. सोलहवें तीर्थकर : श्री शान्तिनाथ महाप्रभु ...6
6. तीर्थ अनेन इति तीर्थ ...10
7. भोपावर का प्रादुर्भाव ...12
8. तीर्थ एवं प्रतिमा की प्राचीनता ...14
9. अतीत में तीर्थ का स्वरूप एवं विकास ...17
10. भोपावर का ऐतिहासिक महत्व ...21
11. तीर्थ का जीर्णोद्धार ...23
12. नवीन जिनालय एक दृष्टि में ...28
13. भोपावर की भौगोलिक स्थिति ...30
14. तीर्थ पर आयोजित होने वाला उत्सव ...32
15. तीर्थ पर उपलब्ध व्यवस्थाएँ ...33
16. समीपस्थ तीर्थ स्थलों का विवरण ...34
17. तीर्थ के लिए आवागमन के साधन ...36
18. भविष्य की स्वर्णिम योजनाएँ ...37
19. तीर्थ एवं प्रतिमा का प्रभाव ...38
20. एक निवेदन ...40
21. संदर्भ ग्रंथ-सूचि ...41
22. सहयोग राशि हेतु बैंक-सूचि ...42

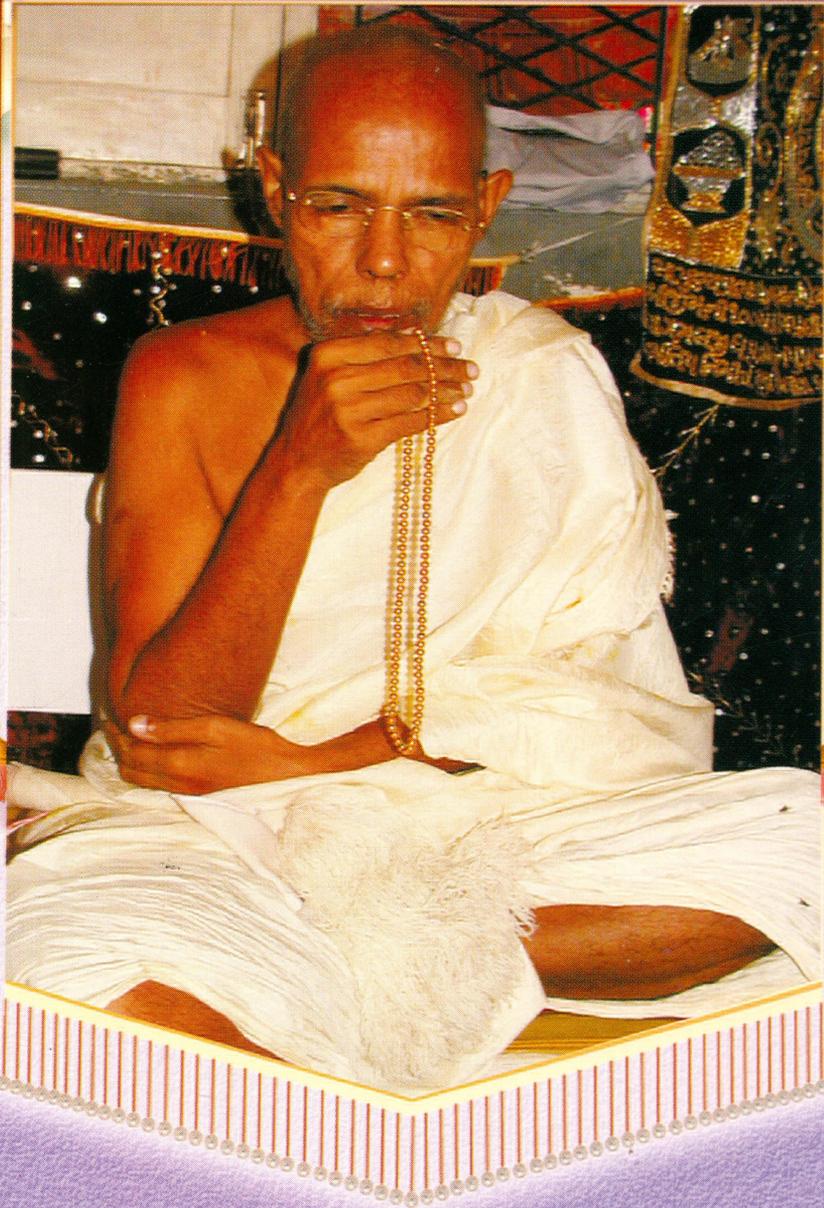
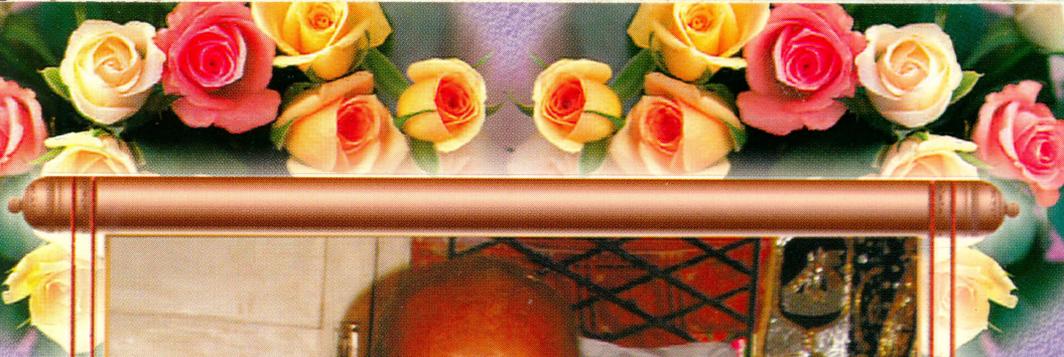


श्री खामणा पार्वनाथ भगवान









परम पूज्य मालव भूषण आचार्यदेव

श्री नवरत्नसागर सूर्यस्वरणी म. सा.



## नवकार महामंत्र

नमो अरिहंताणं  
नमो सिद्धाणं  
नमो आयरियाणं  
नमो उवज्झायाणं  
नमो लोए सव्वसाहूणं  
एसो पंच नमुक्कारो  
सव्व पावप्पणासणो  
मंगलाणं च सव्वेसिं  
पढमं हवइ मंगलं ।

## \* प्रकाशकीय \*

धर्म एवं दर्शन की दृष्टि से भारत का इतिहास अत्यन्त गौरवशाली रहा है। धार जिला भी अपनी प्राचीन ऐतिहासिक धरोहरों के कारण न केवल भारत में अपितु सम्पूर्ण विश्व में विख्यात है। देश के हृदय स्थल मध्यप्रदेश के धार जिला मुख्यालय से 46 किलोमीटर एवं सरदारपुर तहसील से लगभग 8 किलोमीटर दूर स्थित भोपावर तीर्थ भी हमारे गौरवशाली अतीत का एक स्वर्णिम अध्याय है। भोपावर तीर्थ स्थल पर शान्तिनाथ प्रभु की काउसठग मुद्रा में 12 फीट ऊँची श्यामवर्णी, लगभग 87 हजार वर्ष प्राचीन, कांतियुक्त एवं भव्य प्रतिमा स्थित है। यह प्रतिमा भगवान नेमिनाथजी के समय की है, यही कारण है कि भोपावर तीर्थ इस भारतवर्ष का एक अद्वितीय तीर्थ स्थल है।

विगत काल में यह तीर्थ राजगढ़ निवासी श्री प्रेमचन्दजी की व्यवस्था में रहा तत्पश्चात् उनके पुत्र श्रीमान् बागमलजी तथा उनके पुत्र मगनलालजी की व्यवस्था में रहा। इनके स्वर्गवास के पश्चात् इनके अनुज श्री रतनलालजी ने यहाँ की व्यवस्था का कार्यभार संभाला तथा इस तीर्थकी सेवा करते हुए उनका स्वर्गवास हुआ। उनके स्वर्गवास के 30 वर्ष पश्चात् शान्तिनाथ प्रभु की दिव्य प्रेरणा एवं महान तपस्वी पू. आ. श्री नवरत्नसागर सूरेश्वरजी म. सा. के आशीर्वाद से उनके ही परिवार के श्री सुरेन्द्रकुमार राजमलजी जैन ने इस तीर्थ की व्यवस्था का उत्तरवायित्व अत्यन्त सुन्दर तरीके से संभाला।

राजगढ़ नगर के ओजस्वी कवि, गीतकार एवं लेखक यशवंत चौहान ने इस पावन तीर्थ के इतिहास को नये संदर्भों में लिखा है। इस इतिहास में न केवल तीर्थ का गौरवशाली अतीत है वरन् तीर्थ के जीर्णोद्धार के संदर्भ में नवीन जानकारी, भगवान श्री शान्तिनाथजी का संक्षिप्त जीवन वृत्त, तीर्थ की सचित्र जानकारी तथा भविष्य के लिए स्वर्णिम योजनाओं का भी दिग्दर्शन है। श्री यशवंत चौहान ने अथक परिश्रम से तथा नवीन अन्वेषण कर यह कृति तैयार की है हम उनके हृदय से आभारी हैं।

- प्रकाशक मण्डल

## \* पृष्ठभूमि \*

अमेरिका के विचारक एमर्सन का कथन है -

### **There is Properly no History, only Biography**

अर्थात् इतिहास नाम की कोई वस्तु नहीं है, केवल जीवन-चरित है। वास्तविक इतिहास प्रकृति के क्रोड से प्राप्त किया जा सकता है, जहां चट्टाने इसके पृष्ठ हैं; और भवनावशेष उसके शब्द हैं। महापुरुषों का जीवन एवं कर्म स्वयमेव इतिहास है या यंत्र कहें कि उनके जीवन एवं कार्यों को क्रमबद्ध तरीके से लिपिबद्ध कर लिया जाय तो वह एक इतिहास होगा।

यह राष्ट्र स्थापत्यकला एवं शिल्पकला के दृष्टिकोण से सम्पूर्ण विश्व में सिरमौर रहा है। हमारे जैन तीर्थ स्थल न केवल सौन्दर्य एवं विशिष्ट स्थापत्य कला की दृष्टि से अनुपम एवं अद्वितीय हैं बल्कि आत्मा की शुद्धि का कारक भी है।

जिस प्रकार भोजन हमारे शरीर का पोषण करता है, जिनालय हमारी आत्मा का पोषण करते हैं। भोपावर जैन तीर्थ स्थल अत्यंत प्राचीन एवं वैभवशाली है, जहां भगवान श्री शान्तिनाथजी की काउसठन मुद्रा में 87000 वर्ष प्राचीन अत्यंत मनोहारी एवं अद्वितीय प्रतिमा है। इस प्रतिमा के दर्शन मात्र से व्यक्ति आल्हावित हो जाता है, उसके अंतर्मन में आलौकिक आनंद की अनुभूति होती है। यह तीर्थ अत्यंत प्राचीन होने के कारण इसका जीर्णोद्धार भी अत्यंत आवश्यक था।

इतिहास रेखा प्रस्तर नहीं है, इसलिए अतीत की मूलभूत अभिधारणाओं को नवीन दृष्टिकोण देना न केवल समाज का वायित्व है बल्कि लेखक का भी। जैसा कि इलियट ने कहा है, "केवल अतीत ही वर्तमान को प्रभावित नहीं करता वर्तमान भी अतीत को प्रभावित करता है।" इस तर्क से साहित्य एवं इतिहास के नये विकास रूप उसके पूर्व रूपों के मूल्यांकन को प्रभावित करते हैं। यही कारण है कि हम इस तीर्थ के इतिहास का अनुशीलन कर

रहे हैं। चूंकि यह मन्दिर अपने गौरवशाली अतीत से वर्तमान स्वरूप तक पहुँच रहा है एवं तीर्थ के लिए स्वर्णिम भविष्य की महती योजनाएँ भी हैं, अतः यह अत्यंत आवश्यक है कि इन समस्त मान बिंदुओं को इंगित करने वाला कोई दस्तावेज हमारे पास हो। मेरा प्रयास इसी दिशा में है।

इस पुस्तक के नौवें संस्करण के लेखन एवं प्रकाशन में मुझे श्री सुरेन्द्रकुमार राजमलजी जैन (धार), श्री मनोहरलालजी पुराणिक (कुक्षी), श्री शान्तीलालजी सुराणा (इन्दौर), श्री कांतिलाल भंडारी (राजगढ़), हिन्दी साहित्य के वरिष्ठ शिक्षक श्री टी.एस. चौहान, श्री सुनिल वर्मा (सरदारपुर) आदि विद्वज्जनों का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ। पुस्तक की पांडुलिपि तैयार करने में मुझे श्री अमित जैन (कंचन वाफिक्स) का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ।

इस कृति के प्रकाशन में मुझे जिन महानुभवों का प्रत्यक्ष या परोक्ष सहयोग मिला मैं उनका अन्तःकरण से आभारी हूँ। मैं श्री शान्तिनाथजी जैन मन्दिर ट्रस्ट मण्डल भोपावर का विशेष रूप से आभारी हूँ जिन्होंने मुझे इस पावन तीर्थ के इतिहास के अनुशोधन का कार्य सौंपा।

इस पुस्तक के बारे में आपकी प्रतिक्रिया का इंतजार रहेगा ताकि हम अगले संस्करण को और बेहतर बना सकें।

सम्पर्क : "सृजन"  
144, गांधी मार्ग  
राजगढ़ (धार) म.प्र. 454 116



07296-235309

यशवन्त चौहान  
"राष्ट्रीय ओज कवि"

\* आशीर्वचन \*

प.पू. आचार्य श्री नवरत्नसागरजी म.सा.



श्री शंखेश्वर महातीर्थ  
जैन आगम मन्दिर संस्था  
जेठ सुदि 1 गुरुवार

भारत भर के भाविक श्रद्धालु धर्मप्रीमी श्री संघ एवं श्रावक जन  
धर्मलाभ देवगुरु की कृपा से आनंद मंगल

भोपावर महातीर्थ में 87 हजार साल प्राचीन विश्वभर में एक  
मात्र अद्भुत अलौकिक परम प्रभावशाली अति आल्हादक परम  
शान्तिदायक काउस्सवण मुद्रावाली श्यामवर्णकी 12 फीट की,  
खड़ी श्री शान्तिनाथ भगवान की प्रतिमा भाविक भक्तजनों को  
भावविभोर बनाती विराजमान है।

प्राचीन एवं ऐतिहासिक इस तीर्थ का आमूल-चूल जिर्णोद्धार  
जिन शासन के प्रभावशाली जीतार्थ आचार्य भगवंतो के आशीर्वचन  
के साथ द्रुत गति से आगे बढ़ रहा है, भाग्यशाली लक्ष्मीपतिओं  
ऐसे परम पुण्य के पाथेय स्वरूप आत्म शुद्धिकारक तीर्थोद्धार के  
कार्य में आप अपनी संपत्ति का उदारता के साथ हृदय की  
अनुमोदना के साथ लाभ लेकर कृतार्थ बन कर आत्म श्रेय साधें  
यही आंतरिक शुभ प्रेरणा

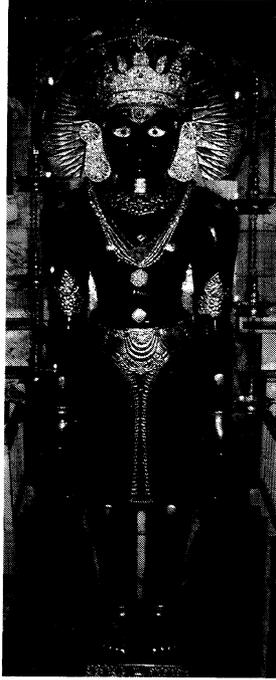
सभी को धर्मलाभ धर्मशिक्षण में प्रगतिमान बनें, मानव जीवन  
को सफल करें।

गुरुदेव साहब साहब साहब

दि. 20/12/08 धर्मलाभ

\* सोलहवें तीर्थकर \*

## श्री शान्तिनाथजी महाप्रभु



इस जम्बुद्वीप के भरत क्षेत्र में कुरुदेश में हस्तिनापुर नाम का एक नगर था। यह नगर प्राकृतिक सम्पदाओं से परिपूर्ण तथा समृद्ध था। इस नगर में महाप्रतापी, शूरवीर, न्यायप्रिय इक्ष्वाकु वंश के महाराजा विश्वसेनजी का राज था। अचिरादेवी महाराज विश्वसेनजी की रानी थी, जो रूप लावण्य एवं सुलक्षणों से युक्त थी। वह सदगुणों से परिपूर्ण एवं शीलवती होने के कारण अपने राजवंश को सुशोभित करती थी। महाराजा एवं महारानी में प्रगाढ़ प्रीति थी। उन दोनों का जीवन अत्यंत सुखपूर्वक व्यतीत हो रहा था।

उस समय अनुत्तर विमानों में मुख्य ऐसे सर्वार्थसिद्ध महाविमान में मेघरथजी का जीव अपनी तैंतीस सागरोपम की सुखमय आयु पूर्ण कर चुका था। वह वहां से भाद्रपक्ष कृष्णा सप्तमी को भरणी नक्षत्र में च्यव कर महारानी अचिरादेवी की कुक्षि (कोंख) में उत्पन्न

हुआ। महारानी ने चौदह स्वप्न देखे। महारानी ने स्वपनों की बात महाराजा से कही। स्वप्न सुनकर महाराज बहुत प्रसन्न हुए उन्होंने कहा, महादेवी आपकी कुक्षि (कोंख) में कोई लोकोत्तम महापुरुष आया है।

महारानी अचिरादेवी की कुक्षि (कोंख) से उत्पन्न बालक कोई सामान्य बालक नहीं था, उसकी नियति तो चक्रवर्ती सम्राट एवं तीर्थंकर पद को सुशोभित करने वाली थी।

कहा जाता है कि - होनहार बिरवान के, होत है चिकने पात। महारानी अचिरादेवी की कुक्षि में आए गर्भस्थ उत्तम जीव के प्रभाव से उस समय कुरुक्षेत्र में फैल रही महामारी शांत हो गयी तथा सर्वत्र शांति व्याप्त होने लगी। यही कारण था कि ज्येष्ठ मास के कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी के दिन भरणी नक्षत्र में जब सभी ग्रह उच्च स्थान पर थे महारानी अचिरादेवी ने जिस पुत्र रत्न को जन्म दिया उसका नाम शान्तिनाथ रखा गया।

इस अद्भुत बालक के जन्मोत्सव मनाने 56 दिक्कुमारी एवं 64 इन्द्र आये एवं मेरुनीरी पर्वत पर परमात्मा का अभीषेक द्वारा जन्म कल्याणक महोत्सव मनाया तथा महाराजा विश्वसेनजी द्वारा अपने नगर में जन्मोत्सव मनाया गया।

यौवनवय प्राप्त होने पर राजकुमार शान्तिनाथ का अनेक राजकन्याओं के साथ विवाह कर दिया गया, महाराजा विश्वसेनजी ने राज्य का भार पुत्र को दे दिया और अपना आत्महित साधने लगे। श्री शान्तिनाथजी यथाविधि राज्य का संचालन करने लगे और निकाचित् कर्मों के उदय से रानियों के साथ भोग भोगने लगे। सभी रानियों में अब स्थान पर महारानी यशोमती थी। महारानी यशोमती ने एक तेजस्वी बालक को जन्म दिया जिसका नाम चक्रायुध रखा गया।

न्याय एवं नीतिपूर्वक राज्य का संचालन करते हुए महाराजा शान्तिनाथजी को 25 हजार वर्ष व्यतीत होने पर अस्त्र शाला में चक्ररत्न का प्रादुर्भाव हुआ। महाराजा ने चक्ररत्न का अर्पण

महोत्सव किया इसके बाद एक हजार देवों से अधिष्ठित चक्र रत्न अस्त्रशाला से निकल कर पूर्व दिशा की ओर चला । उसके पीछे महाराजा शान्तिनाथजी सेना सहित दिग्विजय करने के लिए रवाना हुए । दिग्विजय का कार्य 800 वर्षों में पूर्ण करके महाराजा हस्तिनापुर प्रधारें । आपको चौदह रत्न और नवनिधियों की प्राप्ति हुई । देवों और राजाओं ने महाराजा के चक्रवर्ती होने पर उत्सव किया और महाराजा शान्तिनाथजी को इस अवसर्पिणी काल का पाँचवा चक्रवर्ती घोषित किया । इसके पूर्व चार चक्रवर्ती सम्राट क्रमशः भरत, सगर, मधवा एवं सनत्कुमार थे ।

लोकान्तिक देव चक्रवर्ती सम्राट श्री शान्तिनाथजी से निवेदन करने लगे - हे भगवान ! अब धर्म तीर्थ का प्रवर्तन किंजिए । इसके बाद प्रभु ने वर्षादान देना प्रारंभ कर राजकुमार चक्रायुध को राज्य का भार सौंप दिया । भगवान ने जयेष्ट विदी 14 , भरणी नक्षत्र के दिन दीक्षा ग्रहण की ।

चक्रायुध आदि राज्यजनों ने दीक्षा महोत्सव किया । भगवान को मनः पर्यवज्ञान उत्पन्न हुआ । पौष मास के शुक्ल पक्ष की नवमी का दिन था, चन्द्र, भरणी नक्षत्र में आया था कि भगवान को अनादिकाल से लगे घाती-कर्म नष्ट हो गए और प्रभु को केवलज्ञान-केवलदर्शन प्राप्त हो गया । प्रभु सर्वज्ञ एवं सर्वदर्शी हो गए । इन्द्र आदि ने प्रभु का केवलज्ञान महोत्सव किया समवसरण ( तीर्थंकर को केवल ज्ञान उत्पन्न होने पर इन्द्र आज्ञा से कुबेर उनके समवसरण अर्थात् सभाभवन की रचना करते हैं, जहां तीर्थंकर का धर्मोपदेश होता है ) की रचना हुई । भगवान ने धर्म देशना दी जिसका संक्षिप्त सार निम्न है -

जीवों के लिए अनेक प्रकार के दुःखों का मूल कारण यह चतुर्गति रूप संसार है । जिस प्रकार मूल सूख जाने पर वृक्ष अपने आप सूख जाता है । उसी प्रकार क्रोध, मान, माया और लोभ इन चार कषायों के क्षीण होते ही संसार अपने आप क्षीण हो जाता है । इन्द्रियों पर अधिकार किए बिना कषायों का क्षय असंभव है । इन्द्रिय

रूपी चपल एवं दुर्दान्त अश्व, प्राणी को बल पूर्वक खींचकर नरक की ओर ले जाता है। इन्द्रियों के वशीभूत होकर ही मनुष्य अभक्ष्य भक्षण, अपेय पान और अगम्य के साथ गमन करता है। इन्द्रियों के वशीभूत हुए जीव अपने उत्तम कुल और सदाचार से भ्रष्ट होकर राग एवं मोह का दासत्व करते हैं। समझदार लोग उन्हें देखकर हैंसते हैं जो दूसरों को विनय, सदाचार, धर्म और संयम का उपदेश देते हैं किन्तु स्वयं इन्द्रियों से पराजित हो चुके हैं। एक वीतराग भगवंत के बिना इन्द्र से लेकर एक कीड़े तक सभी प्राणी इन्द्रियों से हारे हुए हैं। स्वर्ण-शिस्रा जैसी वीप ज्वाला के वर्णन से मोहित होकर पतंगा वीपक पर झपटकर मरता है, मनोहर गायन सुनने में लुब्ध हुआ हिरण शिकारी के बाण से घायल होकर जीवन से हाथ धो बैठता है, इसलिए समस्त दुःखों से मुक्त होने के लिए इन्द्रियों का वमन करना चाहिए। बुद्धिमान मनुष्य को चाहिए कि इन्द्रियों के विषय में राग-द्वेष का त्याग करे।

केवल ज्ञान उत्पन्न होने के बाद भगवान 24999 वर्षों तक विचरते रहे। निर्वाण का समय निकट आने पर प्रभु सम्मेतशिखर पर्वत पर पधारें और 900 मुनियों के साथ अनशन किया एक मास के अंत में ज्येष्ठ-कृष्ण 13 (तेरस) को भरणी नक्षत्र में उन मुनियों के साथ भगवान मोक्ष पधारें। भगवान का कुल आयुष्य एक लाख वर्ष का था। समवायांग सूत्र के अनुसार भगवान शान्तिनाथजी के चक्रायुध अग्नि 90 गणधर हुए।

## \* तीर्यति अनेन इति तीर्थ \*

पुण्य क्षेत्रे कृतं पुण्यं बहुधा ऋद्धिमृच्छति ।  
पुण्य क्षेत्रे कृतं पापं महदप्यपि जायते ॥

- शिवपुराण, विद्येश्वर 13/36-38

तीर्थ वास जनित पुण्य कायिक, वाचिक और मानसिक सारे पापों का नाश कर देता है । तीर्थमें किया हुआ मानसिक पाप वज्रलेप हो जाता है । वह कल्पों तक पीछा नहीं छोड़ता है ।

भारतीय संस्कृति में तीर्थ स्थल का अत्यधिक महत्त्व है । कुछ क्षेत्र ऐसे हैं जिन्हे देवताओं तथा ऋषियों ने अपना वास स्थान बनाकर अनुगृहीत किया है । इसीलिए उनमें तीर्थत्व प्रकट हो गया है । तथा अन्य बहुत से तीर्थ क्षेत्र ऐसे हैं जो लोगों की रक्षा के लिए स्वयं प्रादुर्भूत हुए हैं ।

श्री सोमप्रभाचार्यजी ने तीर्थ की महिमा पुनीत तीर्थयात्रा करने वाले संघ का वर्णन करते हुए कहा है कि -

यः संसार निरास लालस मतिर्मुक्त्यर्थमुतिष्ठते,  
यं तीर्थ कथंयति पावन तया येनास्ति नान्यः समः ।  
यस्मै तीर्थप्रतिर्नमस्याति सतां यस्यमाच्छु भं जायते,  
स्फुर्तियस्य परावसति च गुणा यस्मिनस्य संघोऽर्च्यतान् ।

अर्थात् जो संसार से उद्विग्न होकर उसे छोड़ने की इच्छा से मोक्ष में जाने के लिए तत्पर बनता है, पवित्र होने के कारण ज्ञानी पुरुष जिसे तीर्थ कहते हैं, जिसके समान जगत में अन्य कोई नहीं जिसे तीर्थकर भी नमस्कार करते हैं, जिसके द्वारा सतपुरुषों का कल्याण होता है, जिसकी अत्युत्तम महिमा है, जिस श्री संघ में अनेक गुणों का वास है, उस संघ की तुम पूजा करो ।

भारत की तपोभूमि पर अनेक पुण्यात्माओं ने परम उपकारी जगत वल्लभ तीर्थकर भगवंतो के साकार स्वरूप की स्थापना, न केवल स्वकल्याण अपितु जनकल्याण के लिए भी की है । उन

महापुरुषों ने प्रभु-प्रतिमाओं को स्थापित कर देवविमान सहस्र जिनालयों को बनाकर तीर्थ भूमि को जन्म दिया; जिसके दर्शन मात्र से समस्त जीवों की आत्माएं पवित्र हो जाती हैं। यही कारण है कि शास्त्रकारों ने कहा है-

“ तीर्थेति अनेन इति तीर्थ ”

अर्थात् जो आत्मा को तार दे उसी का नाम तीर्थ है।

यह भारत भूमि ऋषियों, मुनियों एवं तपस्वियों की तपोभूमि रही है। हमारे तीर्थ स्थल न केवल हमारी गौरवशाली सांस्कृतिक धरोहर के प्रतीक हैं, बल्कि आत्मा की शुद्धि के केन्द्र भी हैं। चेतना के एकीकृत विकास के पूर्व से ही यहां तीर्थ स्थलों का अस्तित्व था।

तीर्थों का भाव एवं महत्व अति विशिष्ट है। प्रभु की प्रतिमा के स्पर्श मात्र से अन्तर्मन के महासागर की लहरें नृत्य करने लगती हैं, इस पावन भारत भूमि पर ऐसे अनेक तीर्थ स्थल हैं। इन तीर्थ स्थलों में भोपावर जैन तीर्थ स्थल अत्यन्त प्राचीन, कलात्मक एवं वैभवशाली है। जहां तीर्थ के मूलनायक भगवान शान्तिनाथजी की अनुपम एवं अद्वितीय प्रतिमा है। इस ऐतिहासिक जैन तीर्थ पर श्रीकृष्ण, बलरामजी तथा अनेक साधु-संतों की चरणरज विद्यमान है। निःसंदेह तीर्थों द्वारा के बाद यह तीर्थ सम्पूर्ण भारत वर्ष में जिन शासन के गौरव में अभिवृद्धि करेगा।

## \* भोपावर का प्रदुर्भाव \*

महाराजा भीष्मक विदभदेश के अधिपति थे। उनके पांच पुत्र व एक सुन्दर पुत्री थी। सबसे बड़े पुत्र का नाम रुक्मी (रुक्मणकुमार) था, चार छोटे भाईयों के नाम क्रमशः रुक्मरथ, रुक्मबाहु, रुक्मेश और रुक्ममाली थे। उनकी बहिन थी सती रुक्मिणी जो भगवती लक्ष्मीजी का अवतार थी। जब रुक्मिणी ने श्री कृष्ण के सौन्दर्य, पराक्रम, गुण और वैभव की प्रशंसा सुनी तो उसने श्रीकृष्ण को मन ही मन में अपना पति मान लिया था। श्रीकृष्ण भी यह जानते थे कि रुक्मिणी सौन्दर्य, शील, स्वभाव और गुणों में अद्वितीय हैं अतः वही उनके अनुरूप पत्नी हैं।

रुक्मिणी के भाई बन्धु भी चाहते थे कि हमारी बहिन का विवाह श्रीकृष्ण से हो, किन्तु रुक्मी यह नहीं चाहते थे और उन्होने उसका विवाह शिशुपाल से तय कर दिया। वे शिशुपाल को ही अपनी बहिन के योग्य वर समझते थे। परमसुंदरी रुक्मिणी को यह बात पता चलने पर, एक विश्वास पात्र ब्राह्मण को तुरंत संदेश देकर श्रीकृष्ण के पास भेजा एवं अपनी आंतरिक इच्छा से उन्हें अवगत करवाया।

इधर कुड्डिलपुर (कुन्दनपुर) महाराजा भीष्मक अपने बड़े पुत्र रुक्मी के स्नेहवश अपनी कन्या शिशुपाल को देने के लिए विवाहोत्सव की तैयारी करा रहे थे।

रुक्मिणीजी अन्तःपुर से निकलकर देवीजी के मन्दिर के लिए चली। बहुत से सैनिक उनकी रक्षा में नियुक्त थे। वे स्वयं मौन थीं और माताएं तथा सखी सहेलियां सब ओर से उन्हें घेरे हुए थी। शूर-वीर राजसैनिक हाथों में अस्त्र-शस्त्र उठाए कवच पहने उनकी रक्षा कर रहे थे। उन्होने माँ अम्बिका का पूजन-अर्चन किया और अपनी मनोकामना पूर्ण होने के लिए आशीर्वाद मांगा। रुक्मिणी जिस प्रकार उत्सव यात्रा के बहाने मंद-मंद गति से चलकर भगवान श्रीकृष्ण पर अपना सौन्दर्य न्योछावर कर रही थी। उनके सौन्दर्य

को देखकर बड़े-बड़े नरपति एवं वीर इतने मोहित और बेहोश हो गए कि उनके हाथों से अस्त्र-शस्त्र छूटकर गिर पड़े और वे स्वयं भी रथ, हाथी व घोड़े से धरती पर आ गए। उसी समय उन्हें श्याम-सुन्दर श्रीकृष्ण के दर्शन हुए राजकुमारी रुक्मिणीजी रथ पर चढ़ना ही चाहती थी कि श्रीकृष्ण ने समस्त शत्रुओं के देखते-देखते उनकी भीड़ में से रुक्मिणीजी को उठा लिया और उन सैकड़ों राजाओं के सिर पर पांव रखकर उन्हें अपने रथ पर बैठा लिया जिसकी ध्वजा पर गरुड़ का चिन्ह था, और वे बलरामजी आदि यदुवंशियों के साथ वहां से चल पड़े।

रुक्मिणीजी के बड़े भाई रुक्मी को यह बात बिल्कुल सहन नहीं हुई कि मेरी बहिन को श्रीकृष्ण हर ले जाए और राक्षस रीति से बलपूर्वक उनके साथ विवाह करें। रुक्मी बली तो था ही, उसने एक अक्षौहिणी सेना साथ ली और श्रीकृष्ण का पीछा किया। महाबाहु रुक्मी ने कवच पहनकर और धनुष धारण करके समस्त नरपतियों के सामने यह प्रतिज्ञा की कि, मैं आप लोगों के सामने यह शपथ ग्रहण करता हूँ कि यदि मैं युद्ध में श्रीकृष्ण को न मार सका और अपनी बहिन रुक्मिणी को न लौटा सका तो अपनी राजधानी कुन्वदनपुर में प्रवेश नहीं करूंगा, और सारथी से कहा जहाँ कृष्ण हो वहाँ मेरा रथ शीघ्रता से ले चलो।

रुक्मी और श्रीकृष्ण के बीच घमासान युद्ध हुआ जिसमें रुक्मी को पराजय प्राप्त हुई, श्रीकृष्ण ने रुक्मी को जिवित पकड़ लिया किन्तु बहन रुक्मिणी ने भाई रुक्मी की जीवन भीक्षा मांगकर उसे बचाया। रुक्मी ने यह प्रतिज्ञा कर ली थी कि श्रीकृष्ण को मारे बिना व छोटी बहिन को लौटाए बिना वापस कुन्वदनपुर नहीं जायेगा। अतः रुक्मी अपनी प्रतिज्ञा अनुसार वापस कुन्वदनपुर नहीं गए तथा अपने रहने के लिए भोजकुट नाम की एक बहुत बड़ी नगरी बसाई जो वर्तमान में भोपावर के नाम से जानी जाती है।

## \* तीर्थ एवं प्रतिमा की प्राचीनता \*

वर्तमान समय का भोपावर ग्राम अतीत का अत्यन्त सुंदर एवं वैभवशाली नगर था। इसका नाम भोजकट (भोजकुट) था। इस नगर की स्थापना श्री कृष्ण वासुदेव की पत्नी रुक्मिणी के भाई रुक्मी (रुक्मणकुमार) के द्वारा की गई। जिसका प्रमाण यह है कि यहाँ से 17 कि.मी. की दूरी पर कुण्डिनपुर (कुंदनपुर) जिसका वर्तमान नाम अमडोरा है, स्थित है। रुक्मी के पिता भीष्मक यहाँ के अधिपति थे। प्रमाण स्वरूप अमकाङ्गी-डामकाजी में रथ के निशान आज भी मौजूद हैं। यहाँ एक कुण्ड व देवी का मन्दिर है।

रुक्मणकुमार ने मन्दिर का निर्माण कर श्री शान्तिनाथ प्रभु की विशाल 12 फूट ऊँची काउस्सगधारी श्यामवर्णीय प्रतिमा जैन शास्त्रानुसार प्रतिष्ठित करवाई थी। सत्य-अहिंसा से प्रेरित होकर तथा श्री नेमिनाथजी जो यदुवंशी थे एवं जैन धर्म के 22वें तीर्थंकर थे उनकी परंपरा का अनुसरण करते हुए रुक्मी ने श्री शान्तिनाथ प्रभु की प्रतिमा की स्थापना की। यह प्रतिमा भगवान श्री नेमिनाथ के जमाने की हैं।

कल्पसूत्र के अनुसार भगवान श्री पार्श्वनाथ और श्री नेमिनाथजी के समय का अंतर लगभग 84 हजार वर्ष बताया है एवं भगवान श्री पार्श्वनाथ एवं श्री महावीर स्वामी के समय का अंतर 250 वर्ष है। भगवान श्री महावीर का काल भी वर्तमान से 2600 वर्ष पूर्व का है। इस प्रकार यह तीर्थ लगभग 87000 वर्ष प्राचीन है। मूल गर्भ-गृह आज भी यथावत उसी युग का है।

पूज्य न्यायविजयजी द्वारा रचित जैन तीर्थों का इतिहास, प्राचीन ग्रंथों, तीर्थमाला स्त्रोत, प्राचीन तीर्थमाला संग्रह तथा पूज्य श्री कनकविजयजी महाराज द्वारा रचित श्री जैन तीर्थ का इतिहास में भी इस बात की पुष्टि की है कि यह प्रतिमा भगवान नेमिनाथजी के समय की ही है। इससे यह स्पष्ट है कि यह तीर्थ अत्यंत प्राचीन है।

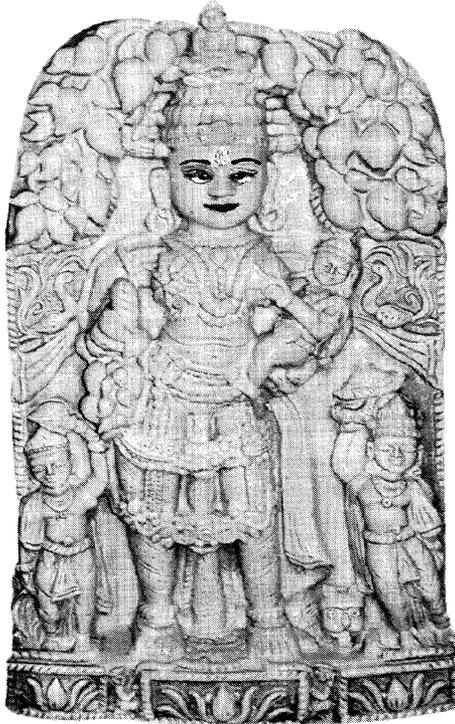
इस तीर्थ की विशाल 12 फुट की काउस्सगधारी प्रतिमा स्वयं इस बात की प्रतीक है कि यह तीर्थ अति प्राचीन है। क्योंकि ऐसी दिव्य एवं विशाल प्रतिमा जो दो पाँव पर आधारित है, उसका निर्माण होना संभव नहीं है; ऐसा शिल्पशास्त्रियों का ही कथन है। मूल गर्भ-गृह का अष्ट पहलू गुम्बज भी प्राचीनता का द्योतक है, जो आज भी यथावत विद्यमान है।

मथुरा की कंकालीटीका के पास दूसरी शताब्दी में बने जैन स्तूप जिसे देव निर्मित स्तूप भी कहा जाता है, उसमें प्राप्त एक शिलालेख में उस समय देव स्थापित मूर्तियों के उल्लेख में कृष्णकाल के जमाने की मूर्तियों का जिक्र है। जिसमें इस विशाल मूर्ति का भी वर्णन है; क्योंकि मथुरा कृष्ण वासुदेव की लीला भूमि रही है। मथुरा से प्राप्त आयोजन पद्यों में भी इस प्रकार की मूर्ति का दृश्य अर्कित है तथा वर्णन भी है।

मूर्ति पर शिलालेख नहीं होना, मूर्ति के नीचे हिरण का चिन्ह होना, मस्तक पर घुघराले बाल जैसा शिल्प होना तथा मूर्ति काले प्राचीन पाषाण की कलात्मक होना, ये सभी इसके पाषाण युग के होने की कहानी कहते हैं। साथ ही प्राचीन जैन तीर्थों के सभी लक्षण जैसे शंखेश्वर पार्श्वनाथ आदि तीर्थों के हैं, वे सभी यहां पाए जाते हैं; यथा - जैन भाइयों की बस्ती का अभाव, जंगली क्षेत्र आविवासी-बस्ती, आसपास जलाशय, चारों ओर प्राकृतिक एवं मनोहारी दृश्य विशिष्ट चमत्कार इत्यादि।

पूर्व व्यवस्थापक स्व. सेठ बागमलजी के जमाने में एक व्यक्ति के शरीर में व्यंतर वेदना थी। वह भी यह बतलाया करता था कि यहाँ पर 40 मन्दिर थे तथा 200 वर्ष पूर्व यहाँ जैनों की अच्छी बस्ती थी। ऐसी ही किंवदंतियाँ यहां के वृद्ध लोग भी बताते हैं। आज भी पुराने मकान, कई टूटी-फूटी मूर्तियों के अवशेष खुदाई करने पर खेतों से मिलते हैं। अमड़ेरा और भोपावर के बीच डाठोल गाँव में भी कई जैन मन्दिर भग्ना स्थिति में पड़े हैं। अगर इनकी खुदाई की जाए तो कई मूर्तियाँ निकल सकती हैं। भोपावर के मन्दिर के जिर्णोद्धार के समय जब खुदाई की गई थी, तो कितनी

ही मूर्ति के अंगोपांग, खंडित मूर्तियाँ, परिकर देव-देवियों की मूर्तियाँ जो की अत्यंत विशिष्ट है, निकली। जिनमें से कई मूर्तियाँ जो साबूत थी, अन्य गाँवों में जहां मन्दिर नहीं थे वहां दर्शन-पूजन हेतु दे दी गई। जीर्णोद्धार के समय नया रंग मंडप आदि बनाने हेतु जब नींव खोदी गई तो खोदने पर विशाल पुराने शिखर का अंश (जो लाल पत्थर से बना हुआ है) निकला, उसका अंत लेने के लिए उसकी और खुदाई की गई तो वह बहुत विशाल होने से तथा उसके ऊपर सरकारी किले की दीवार होने से आगे खोद नहीं पाए। उसको वापस भर दिया तथा उसी शिखर पर नया शिखर बनवाया। मन्दिर के पुराने शिखर का कुछ हिस्सा जानकारी हेतु मन्दिर की परिक्रमा में तीर्थ यात्रियों के दर्शनार्थ खुला रखा है। जिस पर पत्थर का एक टुकड़ा रखा है, इसे उठाकर पुराने शिखर का अंश श्रद्धालु देख सकते हैं। इससे स्पष्ट है कि मन्दिर अत्यंत प्राचीन है।



श्री अंबिका माता

## \* अतीत में तीर्थ का स्वरूप एवं विकास \*

इस तीर्थ के वहीवटककर्ता  
श्री बागमलजी जैन, निवासी राजगढ़  
विक्रम संवत : 1975



(भोपावर तीर्थ के आद्य व्यवस्थापक जिनके प्रयास एवं कड़ी मेहनत ने इस तीर्थ को विकास के मार्ग पर अग्रसर किया। इनके पश्चात् इनके सुपुत्र श्री मंगनलालजी तथा रतनलालजी ने भी अपना सम्पूर्ण जीवन तीर्थ विकास में समर्पित किया इनके बाद सुपौत्र डॉ. प्रकाश जैन, इन्दौर ने सम्पूर्ण सम्पत्ति तीर्थ को दान देकर अपने पूर्वजों का नाम रोशन किया। वर्तमान में इस परिवार के श्री सुरेन्द्र जैन इस तीर्थ का सम्पूर्ण कार्यभार संभाल रहे हैं।)

हमारा भारत वर्ष धार्मिक एवं सांस्कृतिक रूप से विश्व गुरु रहा है। इस देश का अतीत अत्यंत वैभवशाली था। आर्थिक रूप से सम्पन्न इस देश पर अनेक विदेशी आक्रमण हुए तथा उन्होंने न केवल इस देश की आर्थिक सम्पन्नता को बल्कि इस देश की सांस्कृतिक एवं धार्मिक विरासत को भी क्षतिग्रस्त किया। कालांतर में हमारा मालवांचल एवं भोपावर तीर्थ भी इससे असूता नहीं रहा।

इस समय श्रावक सेठ गट्टुलाल पूनमचन्दजी को छोड़कर सभी व्यवसायी आजीविका हेतु बाहर चले गए थे। वे इस तीर्थ की व्यवस्था देखते थे। आँख की बिमारी के पश्चात् सेठ गट्टुलालजी एवं डुंगाजी हुक्मीचन्दजी के हरकचन्द सेठ ने बागमलजी को इस तीर्थ की व्यवस्था संवत् 1970 आसोज विदि 9 को सौंपी। सेठ बागमलजी ने मन्दिर की व्यवस्था 1 रूपये 7 पैसे की सिल्लक लेकर संभाली। जिस समय उन्होंने मन्दिर की व्यवस्था संभाली, उस समय मूलनायक के भोयरे के अतिरिक्त बाहर का हिस्सा वीरान था। बागमलजी ने 82 वर्ष की उम्र में बिमारी के कारण तीर्थ की व्यवस्था अपने पुत्र मगनलालजी व रतनलालजी को सौंप दी।

संवत् 1978 शुभमिति फाल्गुन वदी 5 को प्रातः स्मरणीय गणधर भगवन्त श्री सुधर्म स्वामीजी की पुण्यवंती पाठ परंपरा में आए हुए 1008 श्री जैन आचार्य श्रीमद् सागरानंद सूरेश्वरजी महाराज परमपूज्य पन्थास मोतीविजयजी महाराज तथा अदि ठाणा 26 सहित भोपावर पधारे और श्री शान्तिनाथ भगवान के दर्शन कर अपूर्व आनंदित हुए। अधिष्ठायक देव का स्वप्न भी महाराज साहेब को प्राप्त हुआ, जिसमें तीर्थ की प्राचीनता बाईसवें तीर्थकर भगवान नेमिनाथजी के समय की ज्ञात हुई। महाराज साहेब ने चौमासा एवं विहार के समय सारे देश में इस पावन तीर्थ की महिमा लोगों को बटाई और इस तीर्थ की यात्रा के लिए उन्हें प्रेरित किया। समग्र भारत वर्ष से तीर्थ यात्री भोपावर आने लगे। तीर्थ पर आमदनी शुरू हुई और मन्दिर के जीर्णोद्धार का कार्य प्रारंभ किया गया। तीर्थ स्थल पर एक पेढी कायम की गई जिसका नाम श्री शान्तिनाथ जैन श्वेताम्बर मन्दिर ट्रस्ट (पेढी) रखा गया। सुरत निवासी सेठ चुन्नीभाई मन्डूभाई की धर्मपत्नी सेठानी कंकूबाई की तरफ से राजगढ़ में ठहरने के लिए धर्मशाला बनाई गई। श्री संघ के निवेदन पर तात्कालीन रियासती शासक जिवाजी राव शिंदे ने यात्रियों के लिए सरदारपुर से भोपावर तक पक्की सड़क बनवा दी। माही नदी पर सरदारपुर नगरपालिका ने एक पुल का निर्माण करवाया जिससे भोपावर का आवागमन सुगम हो गया; एवं मन्दिर की प्रसिद्धि बढ़ने लगी। मन्दिर का शिखर, वर्तमान काँच का नया मण्डप एवं आगे

का रंग मण्डप नये बनवाये गये। सेठ आनंदजी कल्याणजी की पेढ़ी गोड़ी पार्श्वनाथ मन्दिर से भी सहायता गुरुमहाराज सा. की प्रेरणा से प्राप्त हुई। मन्दिर में काँच की सुन्दर कारीगरी का कार्य कुशल कारीगरों से करवाया गया। खम्भों एवं दीवारों पर कथानक चरित्र तथा शिलालेख काँच में अंकित करवाये गये। जिससे मन्दिर के सौन्दर्य में चार चाँद लग गये।

वर्तमान मन्दिर दो मन्जिला है। नीचे की मन्जिल पर नए सभा मण्डप में द्वार के एक और साठारानंदसुरीश्वरजी महाराज एवं भेरुजी की प्रतिमा है तथा दूसरी और मणिभद्रजी, जम्बुस्वामीजी गौतमस्वामीजी, आठमारामजी महाराज साहेब की प्रतिमा है। इसके अतिरिक्त मानभद्रजी एवं क्षेत्रपालजी की मूर्तियाँ भी हैं। मन्दिर में प्रवेश करते ही दो विशाल हाथी बने हुए हैं। ऐसा प्रतीत होता है, मानो वे आपके स्वागत के लिए तत्पर हों। द्वार पर ही रावण-मन्दोदरी के सुन्दर चित्र बने हुए हैं। द्वार के ठीक ऊपर अष्टापदजी तीर्थ का सुन्दर चित्र बना हुआ है। ठीक सामने मूलनायक भगवान श्री शान्तिनाथजी की भव्य प्रतिमा है। उनके चरणों के पास इन्द्र-इन्द्राणी की मूर्ति है। उपर मस्तक के पास शान्तिनाथजी एवं चन्दाप्रभुजी की श्वेतवर्णी प्रतिमा है। मूलनायक की प्रतिमा के दोनो ओर स्वस्तिक बने हुए हैं। उनके आभा मण्डल के पीछे एक चक्र बना हुआ है तथा प्रभु की प्रतिमा के ठीक उपर रजत छत्र लगा हुआ है। बाहर भगवान नेमिनाथजी एवं ऋषभदेवजी की प्रतिमा है। मूलनायक का लेप करवाकर पुनः प्रतिष्ठा प्रातः स्मरणीय गणधर भगवन्त श्री सुधर्मा स्वामीजी की पुण्यवंती पाठ परंपरा में आए हुए 1008 पूज्यपाद आठमोद्धारक आचार्य श्रीमद् साठारानंद सुरीश्वरजी महाराज साहेब के वरद्व हस्त से संवत् 1983 में हुई। अतीत में उन्होंने जीर्णोद्धार का जो कार्य किया, उसे यह मालव माटी कभी भी विस्मृत नहीं कर पाएगी। मन्दिर में श्री वल्लभसुरीजी म.सा. की प्रतिमा भी है, नीचे के नूतन सभा मण्डप में शत्रुंजय तीर्थ का विशाल मॉडल, काँच का आठम मन्दिर, गुरु मन्दिर, हीरसुरीजी महाराज द्वारा अकबर बादशाह को प्रतिबोध, आठरा निवासी चम्पाबहन की 6 माह की उपवास की तपश्चर्या तथा शान्तिचंद आचार्य को बादशाह

का दिया गया फरमान आदि दर्शनीय है। रंग मण्डप में श्री शान्तिनाथ भगवान के 10 भव, श्रीपाल राजा के 10 भव, श्रीपाल-चरित, नेमिनाथ भगवान की बारात का दृश्य, 16 मूर्तियों के चित्र, ब्राह्मी सुन्दरी के द्वारा बाहुबलीजी को उपदेश, नरक की यातनाओं के दृश्य आदि कथानकों का चित्रण है। इसके अतिरिक्त गरुड़ यक्ष, शान्तिनाथ भगवान के पगलियाजी, अंबाजी की खेत से प्राप्त श्वेतवर्णी दर्शनीय प्रतिमा एवं अन्य सुन्दर चित्र रंगमण्डप में स्थित हैं।

ऊपर की मन्जिल पर श्री पार्श्वनाथ भगवान के 10 भव तथा अन्य कई कथानकों का चित्रण है। साथ ही ऊपर नये हाल में पद्मावति माताजी के मस्तक पर श्री स्वामणा पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमा है। साथ ही हाल में सहस्रफणा पार्श्वनाथजी की प्रतिमा है जिसकी प्रतिष्ठा श्री पुष्पसेन पानाचंदजी जवेरी परिवार, सुरत वाले हाल मुकाम मुम्बई द्वारा की गई। आगे हाल में शंखेश्वर पार्श्वनाथ शतुंजयावतार श्री आदेश्वर दादा, श्री नागेश्वर पार्श्वनाथ के आईल पेंट से बने भव्य चित्र हैं।

सुरत निवासी श्री गेलाभाई रतनचंद ने यात्रियों के विश्राम हेतु एक बगीचा बनवाकर भेंट की। मन्दिर का शिखर भी उनकी मदद से बना। गुजरात के अन्य भाइयों ने तीर्थ जीर्णोद्धार का कार्य आगे बढ़ाया। उन्होने पेढी का नया भवन बनवाया, शिखर के पास ही दूसरी मन्जिल बनाई गई जिसमें पद्मावती के मस्तक पर स्थित स्वामणा पार्श्वनाथ की श्यामवर्णी प्रतिमा पद्मासन मुद्रा में है। यह प्रतिमा पूज्य आचार्य धर्मसूरीश्वरजी की प्रेरणा से बड़ौदा से प्राप्त हुई थी। चन्दा प्रभुजी की प्रतिमा की प्रतिष्ठा पूज्य विजय सागरजी एवं क्षमा सागरजी की निश्रा में तत्कालीन व्यवस्थापक बागमलजी प्रेमचन्दजी के द्वारा हुई। इसके साथ ही पोष विदि दशमी को पार्श्वनाथ जन्म कल्याणक उत्सव भी आयोजित होने लगा। इस मन्दिर पर ध्वजा भी चढ़ाई जाती है। यह तीर्थ स्थल अत्यन्त प्राचीन होने के साथ वैभवशाली भी है, एवं मालवांचल का गौरव है।

## \* भोपावर का ऐतिहासिक महत्व \*

भोपावर न केवल प्राचीनकाल में बल्कि मध्यकाल एवं आधुनिक काल में भी भारतीय इतिहास की अमूल्य धरोहर रहा है। इस नगर का अभ्युदय ही प्राचीन भारत की महान घटनाओं में से एक है। कृष्ण के पौत्र अनिरुद्ध का विवाह रुक्मी को पौत्री रोचना के साथ तय हुआ। अनिरुद्ध के विवाहोत्सव में सम्मिलित होने के लिए श्री कृष्ण, बलरामजी, रुक्मणीजी, प्रद्युम्न आदि द्वारकावासी भोजकुट (भोपावर) में पधारे थे। भोपावर (भोजकुट) का प्राचीन काल से ही अमड़ोरा से गहरा सम्बन्ध रहा है। जिसकी परछाई भारतीय इतिहास के मध्यकाल एवं आधुनिक काल में भी देखी जा सकती है।

सन् 1857 के स्वतंत्रता संग्राम में मालवांचल की अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका रही है। स्वतंत्रता के महायज्ञ में अनेक रणवीरों ने अपने प्राणों की आहुति देकर इस मालवमाटी का गौरव बढ़ाया है। आजादी के महासमर में ऐसे ही एक बलिदानी राणा बख्तावरसिंह थे, जिन पर न केवल इस मालवमाटी को अपितु सम्पूर्ण भारतवर्ष को अभिमान है। सन् 1857 के स्वतंत्रता संग्राम के समय महाराणा बख्तावरसिंह अमड़ोरा के राजा थे। उनके पिता का नाम राव राजा अजीतसिंह व माता का नाम इन्द्रकुँवर था। वे बाल्यकाल से ही महान योद्धा, वृद्ध निश्चयी होने के साथ आजादी के दीवाने थे। सन् 1857 के स्वतंत्रता संग्राम में अमड़ोरा मालवा की सबसे पहली रियासत थी जिसका उद्देश्य मालवा से कंपनी राज्य समाप्त करना था। इसी संदर्भ में महाराजा बख्तावरसिंह अंग्रेजों के विरुद्ध हो गए।

भोपावर एजेंसी स्थित अमड़ोरा के वकील 2 जुलाई 1857 को सायं 4 बजे अमड़ोरा आ गए। वकील ने अमड़ोरा आने का कारण बताया था कि उसके परिवार में कोई व्यक्ति सख्त बीमार था। उन्होंने भोपावर के केप्टन एचिसन से आदेश प्राप्त नहीं किया था। वे बिना

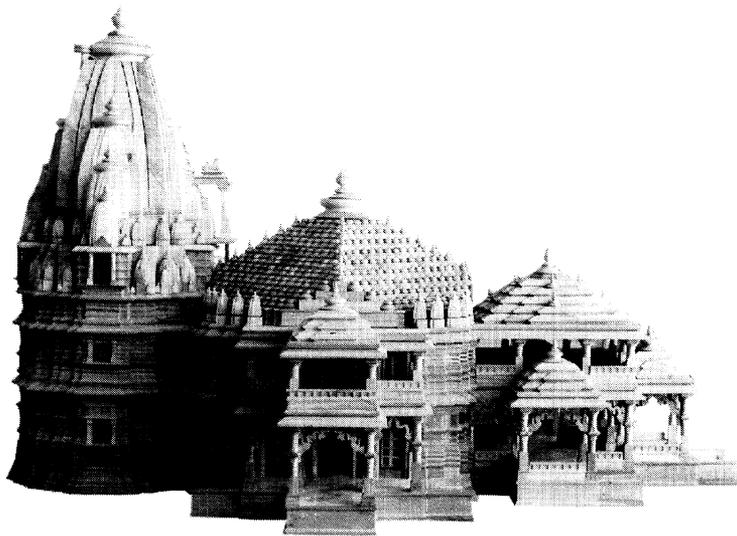
किसी आदेश एवं अनुमति से भोपावर छोड़कर अमडोरा चले आए ।

3 जुलाई 1857 को अमडोरा के वीवान गुलाबराय सशस्त्र सिपाहियों के साथ भोपावर एजेन्सी आए । उनके साथ संदला के ठाकुर भवानीसिंह भी थे । भवानीसिंह के पास 2 बंदूकें थीं । उन्होंने एजेन्सी के कर्मचारियों को बंदी बना लिया और समस्त शासकीय दस्तावेज समाप्त कर दिए । इसी समय अमडोरा के सैनिकों ने रोष में आकर ब्रिटीश ड्रंदा फाड़ डाला और उसे एजेन्सी से हटा दिया । केप्टन एचिसन और उसके दल का भोपावर से 27 कि.मी. आंदोलनकारियों ने पीछा किया । आंदोलनकारियों के दल का नेतृत्व अमडोरा के श्री मोहनलालजी ने किया था । -

अमडोरा के सिपाहियों ने भोपावर का पोस्ट ऑफिस, चिकिट्सालय एवं एजेंसी हाउस नष्ट कर दिया । सिपाहियों के सहयोग के लिए कुछ स्थानीय नागरिक भी साथ हो गए । ये लोग तोड़फोड़ कर पास के जंगलों में भाग जाते थे । इस प्रकार भोपावर में अमडोरा के सिपाहियों ने विद्रोह का शंख फूंक दिया । अमडोरा के सिपाहियों का विद्रोह भोपावर एजेंसी के लिए एक चुनौती हो गई थी । सन् 1857 के आंदोलन सम्बन्धी दस्तावेज ( जो की राष्ट्रीय अभिलेखागार नई दिल्ली में हैं ) के अध्ययन से यह विदित होता है कि 1857 के विद्रोह में अंग्रेज अधिकारियों को अपने परिवार सहित भोपावर से भागना पड़ा था ।

होल्करों की नीति अमडोरा के प्रकरण में कूटनीति पूर्ण रही । अंग्रेज महाराणा बख्तावरसिंह से भयभीत हो चुके थे और वे समझ चुके थे कि उन्हें सरलता से पकड़पाना संभव नहीं है । अतः उन्होंने महाराणा बख्तावरसिंह को 13 नवम्बर 1857 को छल पूर्वक बन्दी बनाया, उन पर महज दिखावे के लिए मुकदमा चलाया गया एवं 10 फरवरी 1858 को उन्हें इन्दौर के एम.टी.एच. वाउन्ड पर फाँसी दे दी गई । महाराणा बख्तावरसिंह व उनके साथियों ने हँसते हँसते इस देश की सेवा में अपना प्राणों की आहुति दे दी । उनके इस बलिदान को शत्-शत् नमन् ।

## \* तीर्थ का जीर्णोद्धार \*



जिन शासन की गौरवगाथा को प्रतिबिंबित करने वाला श्री भोपावर महातीर्थ लगभग 87000 वर्ष प्राचीन है। मालवा के मस्तक पर तिलक स्वरूप यह तीर्थ जैन धर्म का यशोगान करते हुए शान्ति की श्रद्धास्थली बन गया है। इस तीर्थ का तीर्थोद्धार वर्तमान युग की एक महान धार्मिक घटना है। इस तीर्थ के विकास की यात्रा बहुत लम्बी है।

संवत् 1978 में पूज्य आचार्य आनंदसागर सूरीश्वरजी महाराज, प्रातः स्मरणीय गणधर भगवन्त श्री सुधर्म स्वामीजी की पुण्यवंती पाठ परंपरा में आये हुए पूज्य श्रीसागरानंद सूरीश्वरजी महाराज और पन्थास प्रवर श्री मोतीविजयजी महाराज आदि गुरु भगवंतों ने इस तीर्थ के विकास के कार्य को आगे बढ़ाया और यह तीर्थ सम्पूर्ण भारत में प्रसिद्धि पाने लगा।

इस तीर्थ के उद्भव से लगाकर अब तक इतिहास ने कई करवटें बदली हैं। अत्यंत प्राचीन होने के कारण यह तीर्थ अत्यंत ही जीर्ण अवस्था में पहुंच चुका था, इसलिए इसका जीर्णोद्धार

अत्यंत आवश्यक था। जैसा कि मैंने पुस्तक की भूमिका में लिखा है कि इतिहास रेखा-प्रस्तर नहीं होता, इसके अनेक प्रमाण हैं यथा खंभात का चिन्तामणि पार्श्वनाथ मन्दिर जो ई.सन् 1108 में बनवाया गया था, और सन् 1295 में इसका जीर्णोद्धार करवाया गया था। वहां के लेखों से पता चलता है कि वह समय-समय पर मालवा, सपदलक्ष तथा चित्रकूट के अनेक धर्मानुयायियों के विपुल दान के द्वारा समृद्ध बनाया गया था। हमारा प्रयास भी इसी दिशा में है। भगवान श्री शान्तिनाथजी की प्रतिमा भट्य एवं शोभावान दिखे इसलिए भट्यातिभट्य जिन मन्दिर के नवनिर्माण का निश्चय किया गया।

पूर्ण रूप से नवनिर्मित होने वाले जिन मन्दिर के तीर्थोद्धार की जानकारी श्री जिन शासन के लगभग समस्त गीतार्थ पूज्य आचार्य भगवंतो को देने पर सभी कृपावंतो ने वासक्षेप भेजकर इस पुनीत कार्य के लिए अपना शुभाशीष प्रदान किया। अनेक प्रतिष्ठित एवं अनुभवी जिन मन्दिर निर्माण करने वाले सोमपुराओं से मन्दिर के लिए विविध नक्शे तथा खर्च आदि की जानकारी निकाली गई अंततः एक अद्भुत, विशिष्ट नक्काशी वाले तथा उच्च शिखर वाले मन्दिर के नक्शे/मॉडल को अन्तिम रूप दे दिया गया। इस जिनालय के निर्माण का कुल खर्च लगभग 15 करोड़ रुपये आँका गया है।

जीर्णोद्धार के कार्य में परम पूज्य आचार्यदेव श्री सागरानंद सूरीश्वरजी महाराज पट्टधर, समुदाय के गौरव मालव देशोद्धारक परम पूज्य आचार्य भगवंत श्री चन्द्रसागर सूरीश्वरजी महाराज के सुशिष्य रत्न मालव भूषण, वर्तमान तपोनिष्ठ परम पूज्य आचार्य देवेश श्री नवरत्नसागर सूरीश्वरजी महाराज का मंगलमय आशीर्वाद एवं मार्गदर्शन से संभव हो रहा है।

12 दिसंबर 2002 के शुभ दिन जिनालय के भूमिपूजन द्वारा तीर्थोद्धार के कार्य का शुभारंभ हुआ। पूना निवासी परम गुरुभक्त शाह हंसराजजी धर्माजी कटारिया परिवार ने उदारता पूर्वक बोली

बोलकर भूमिपूजन किया ।

इस शुभ अवसर में मंगल स्वरूप मालवा के इतिहास में प्रथम बार 1600 तेले का (अहम) का आह्वान किया था, जो पूर्ण हुआ । भूमि पूजन तथा 1600 तेले का सम्पूर्ण लाभ इन्दौर निवासी श्रीमती ललिताबेन हिम्मतभाई ओद्यवजी गाँधी परिवार ने लिया था । इसके बाद भूमि पूजन स्थल पर 60 फीट लम्बा 60 फीट चौड़ा तथा 27 फीट गहरा गड्ढा खोदा गया । 5 जून को शुभ मुहूर्त में जिनालय का भव्यातिभव्य शिलान्यास समपन्न हुआ । इस अवसर पर 16000 आयंबिल का ऐतिहासिक आह्वान किया गया था, तथा बड़े पैमाने पर गाँव-गाँव आयंबिल आराधना हुई ।

शिला स्थापना समारोह का सम्पूर्ण लाभ राधनपुर निवासी मातुश्री कंचनबेन रसिकलाल गाँधी परिवार, मुम्बई ने लिया था । शिलान्यास समारोह संपन्न होते ही युद्ध स्तर पर विशाल गड्ढे को पत्थरों की जुड़ाई करके भरा गया तथा नींव इतनी मजबूत बनाई गई कि भूकम्प के बड़े झटकों का भी जिनालय पर कोई असर न हो ।

मन्दिर का जीर्णोद्धार का कार्य द्रुतगति से चल रहा है । पू.आचार्य श्री नवरत्नसागर सूरेश्वरजी म.सा. के मार्गदर्शन तथा प्रेरणा से चल रहे, इस तीर्थोद्धार के कार्य को परम गुरु भक्त श्रेष्ठिवर्य श्री रमणलालजी जैन (मोन्टेक्स ग्रुप) ने अभूतपूर्व सहयोग देकर उठा लिया, उन्हीं के नेतृत्व में तीर्थोद्धार का कार्य चल रहा है । शान्तिनाथ प्रभु के इस तीर्थ का कार्य सुन्दर एवं श्रेष्ठ हो इस हेतु श्रेष्ठिवर्य श्री कुमारपाल भाई वी.शाह, धौलका वालों ने भी पूरा - पूरा सहयोग एवं मार्गदर्शन दिया ।

तीर्थ के संचालन एवं जिनालय निर्माण आदि सम्पूर्ण कार्य को धार निवासी श्रेष्ठिवर्य श्री सुरेन्द्रकुमारजी राजमलजी जैन (पेट्रोल पंप वाले) ने सुन्दर रूप से संभाला है । सोमपुरा महेन्द्रभाई माण्डवी, पालीताणा वालों ने इस भव्य जिनालय के डिजाईन, नक्शे आदि बनाकर इस तीर्थ को अद्वितीय रूप देने का संकल्प

लिया है। बंसी पहाड़पुर खदान के श्रेष्ठ गुलाबी पत्थरों के द्वारा जिनालय के निर्माण का कार्य द्रुत-गति से चल रहा है।

4 जून 2003, बुधवार को सोलहवें तीर्थंकर भगवान श्री शान्तिनाथ प्रभु का 108 अभिषेक विभिन्न नदियों के एवं पवित्र जलकुण्ड के जल तथा औषधियों से मन्त्रोच्चार के साथ किया गया। भोपावर महातीर्थ में शिला स्थापना महोत्सव दिनांक 5 जून 2003, गुरुवार को सम्पन्न हुआ, जिसका पुण्य लाभ निम्न भाव्यशालियों को मिला-

- |              |   |  |
|--------------|---|--|
| मुख्य शिला   | - | श्री सुमेरुमलजी कानमलजी सदानी<br>(सरत वाले), बैंगलोर                 |
| अधिकोण शिला  | - | श्री चन्द्रसेन भाई अभेचन्दजी झवेरी, मुम्बई                           |
| उत्तर शिला   | - | श्री रमण भाई जैन (मोण्टेक्स ग्रुप), मुम्बई                           |
| वायव्य शिला  | - | श्री कस्तूरचन्दजी बापूलालजी परिवार<br>श्रीजसुभाई महेन्द्रभाई, मुम्बई |
| ईशान शिला    | - | श्री निरंजन भाई गुलाबचन्द चौकसी, मुम्बई                              |
| पश्चिम शिला  | - | श्री हर्षदराय वीरचन्द शाह<br>श्री गिरीश भाई, मुम्बई                  |
| पूर्व शिला   | - | सौ. अलकाबेन पंकजभाई गांधी, मुम्बई                                    |
| नैरुत्य शिला | - | श्री सुरेन्द्रकुमारजी राजमलजी जैन<br>(पेट्रोल पंप वाले), धार         |
| दक्षिण शिला  | - | श्री प्रदीपभाई गुलाबचन्दजी चौकसी, मुम्बई                             |

उर्ध्व शिला (सिद्ध शिला) एवं महातीर्थ के चौबीस महाअंठ स्वरूप चौबीस तटवो की सिद्ध-शिलाओं का स्थापना महोत्सव 28 फरवरी 2004 (मिति फाल्गुन सुदी 8), शनिवार को मालवोद्धारक आचार्य भगवंत श्री चन्द्रसागर सूरेश्वरजी म. सा. के शिष्यरत्न एवं शंखेश्वर आठम मन्दिर के संस्थापक पूज्य प्रन्यास अभ्युदय सागरजी के लघु, गुरु-भाता भोपावर तीर्थोद्धार प्रेरक महान तपस्वी पूज्य आचार्य श्री नवरत्नसागर सूरेश्वरजी म. सा. एवं उनके शिष्य गणीवर्ध श्री विश्वरत्नसागरजी म. सा. आदि साधु-साध्वी के शुभ सानिध्य में सम्पन्न हुआ।

उर्ध्व शिला (सिद्ध शिला) की स्थापना दानवीर जैनरत्न श्रेष्ठिवर्य श्री दीपचन्दजी एस. गार्डी, मुम्बई के कर कमलों से हुई, कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री रमणलालजी जैन (मोण्टेक्स ग्रुप), मुम्बई ने की। इस अवसर पर विधि-विधान करवाने हेतु श्री रघुनाथजी शास्त्री (गायत्री पंचांग निर्माता) एवं तीर्थ शिल्पाचार्य श्री महेन्द्रभाई सोमपुरा, पालीताणा भी उपस्थित थे।

महाप्रभावी श्री शान्तिनाथजी प्रभुजी के जिनालय के मुख्य प्रवेश द्वार से 40 फीट दूर 50 फीट की त्रिज्या में एक सुन्दर न्यास स्थान बनाया जायेगा। दादा परिवार के सदस्य की पूरे आकार की, प्रभु के दर्शन करती हुई मुद्रा में सफेद संगमरमर की मूर्ति बनाई जाएगी; इसके साथ ही परिवार की प्रशस्ति का एक सुन्दर शिलालेख भी लगाया जायेगा।

महाप्रभावी श्री शान्तिनाथ प्रभुजी का ऐतिहासिक मन्दिर एक विशाल क्षेत्र में विस्तार लिए हुए है। इस तीर्थ भूमि का प्रवेश द्वारा अत्यंत कलात्मक तथा अति भव्य रूप में बनाने की योजना है। प्रवेश द्वार पर दानदाता का नाम व प्रवेश द्वार के एक ओर 6 फीट की ऊँचाई वाला प्रशस्ति पत्र लिखा जायेगा।

मन्दिर के सभा मण्डप और कोली मण्डप का निर्माण कार्य भी द्रुतगति से चल रहा है। इस हेतु देव-द्रव्य एवं साधारण खातों में द्रव्य की सख्त आवश्यकता है। आप अपनी शक्ति के अनुसार ट्रस्ट के नाम बैंक ड्राफ्ट भेजकर इस तीर्थ के विकास में सहभागी बने एवं पुण्य लाभ प्राप्त करें।

## \* नवीन जिनालय एक दृष्टि में ... \*

### .. ब्रह्म प्रासाद ..

क्रमांक	विगत	क्षेत्रफल
1.	मुख्य गर्भगृह	13'-7" X 13'-7"
2.	मुख्य गर्भगृह रेखाएं	18'-1" X 18'-1"
3.	ब्रह्म गर्भगृह	27'-1" X 27'-1"
4.	मुख्य रेखाएं	35'-11" X 35'-11"
5.	गूढ़ मंडप	43'-11" X 43'-11"
6.	रंग मण्डप	35'-11" X 35'-11"
7.	जिन मन्दिर की कुल लम्बाई	175' फीट
8.	जिन मन्दिर की कुल चौड़ाई	121' फीट
9.	शिखरजी की ऊँचाई	121' फीट

### .. जिन प्रासाद का विवरण ..

1.	प्रासाद का नाम	श्री शान्तिनाथजी प्रासाद
2.	प्रासाद का शृंग	189
3.	प्रासाद का तल भाग	12 बाराईतल
4.	प्रासाद की जाति	नागराही जाति
5.	प्रासाद की दिशा	पूर्वाभिमुख
6.	प्रासाद का प्रियदेव	श्री शान्तिनाथजी भगवान
7.	गूढ़ मण्डप का नाम	सुरनंदन मण्डप
8.	रंगमण्डप का नाम	विमानदि मण्डप

### .. प्रासाद की आयादि ..

1.	प्रासाद उदय	20'-1" ध्वज आय
2.	प्रासाद बारसाख	12'-1" X 6'-11" ध्वज आय
3.	प्रासाद की दूसरी भूमि	16'-9" ध्वज आय का आय

जिन मन्दिर का सुन्दर से सुन्दर निर्माण बंसी पहाड़पुर के श्रेष्ठतम पटथरों से होगा तथा जिन मन्दिर के अन्दर का सम्पूर्ण काम मकराना के श्रेष्ठतम सफेद संगमरमर से होगा।

महाप्राणी प्रभु श्री शान्तिनाथ भगवान के निर्माणाधीन  
महाप्रासाद में महातीर्थ के 24 महाअंग स्वरूप 24 तत्वों की  
लिङ्ग शिलाओं की स्थापना हेतु भारतभर के निम्न प्रमुख जैन  
तीर्थ ट्रस्ट मण्डल एवं जैन श्रीलिंगों को आमंत्रित किया एवं  
उन्होंने पधारकर हमारे इत्साह को सिंगुणित किया

श्री सेठ आनंदजी कल्याणजी ट्रस्ट	अहमदाबाद
श्री सेठ जीवनदास गोडीदास शंखेश्वर पार्श्वनाथ ट्रस्ट	शंखेश्वर तीर्थ
श्री के.पी.संघवी रिलीजियस ट्रस्ट	पावापुरी तीर्थ
श्री सुमतिनाथ जैन श्वेताम्बर ट्रस्ट, मालगाँव संघ	मालगाँव
श्री भेरुतारक धाम तीर्थ	अनावरा (सिरोही)
श्री जैन श्वे. नागेश्वर पार्श्वनाथ तीर्थ पेढी	नागेश्वर तीर्थ
श्री आदिनाथ राजेन्द्र जैन श्वे. पेढी ट्रस्ट	मोहनखेड़ा तीर्थ
श्री राज राजेन्द्र तीर्थ दर्शन ट्रस्ट	मोहनखेड़ा तीर्थ
श्री पार्श्वनाथ राजेन्द्र जैन श्वे. ट्रस्ट	तालनपुर
श्री पद्मप्रभु कल्याणजी जैन श्वे. प्रब्लिक ट्रस्ट	लक्ष्मणी तीर्थ
श्री जैन श्वे. तीर्थ पेढी	माण्डवगढ़ तीर्थ
श्री अमीडारा पार्श्वनाथ जैन श्वे. तीर्थ	अमीडारा तीर्थ
श्री भक्तामर महातीर्थ, अभ्युदय धाम न्यास	धारा नगरी
श्री अवन्ति पार्श्वनाथ तीर्थ मारवाड़ी समाज ट्रस्ट	उज्जैन तीर्थ
श्री ऋषभदेव छगनीराम पेढी ट्रस्ट	उज्जैन तीर्थ
श्री जैन श्वे. पारासली तीर्थ	पारासली तीर्थ
श्री ऋषभदेवजी केशरीमलजी जैन श्वे. पेढी	रतलाम
श्री चन्दाप्रभु जैन वेरासर ट्रस्ट	चेन्नई
श्री सुपार्श्वनाथ जैन उपाश्रय	मुम्बई
श्री गुजराती अंधेरी समाज, विलेपार्ले	मुम्बई
श्री जवेरचन्दजी प्रतापचन्दजी सुपार्श्वनाथ जैन उपाश्रय	मुम्बई
श्री शान्ताकृज जैन तपागच्छ जैन संघ	मुम्बई
श्री चौपाटी जैन श्रीसंघ	मुम्बई
श्री भन्डारीया जैन श्वे. महाजन मूर्तिपूजक संघ	मुम्बई
श्री सहस्रफणा पार्श्वनाथ जैन श्वे. वेरासर	मुम्बई
श्री उंडा जैन श्री संघ	उंडा

## \* भोपावर की भौगोलिक स्थिति \*

मध्यप्रदेश के मानचित्र में भोपावर तीर्थ स्थल एक वैदिकप्रमाण नक्षत्र की भाँति है। सम्पूर्ण भारत वर्ष में प्रसिद्ध इस जैन तीर्थ स्थल का सम्मोहन ऐसा है कि जो भी व्यक्ति एक बार इस तीर्थ स्थल के दर्शन करता है, वह सदैव इस तीर्थ के प्रति आर्कषण का अनुभव करता है। भोपावर तीर्थ स्थल इन्दौर-अहमदाबाद राष्ट्रीय राजमार्ग पर स्थित सरदारपुर तहसील मुख्यालय से मात्र 6 कि.मी. दूर है। राजगढ़ नगर से इस तीर्थ की दूरी सरदारपुर होकर लगभग 12 कि.मी. है। वर्तमान में राजगढ़ नगर से भोपावर के लिए सीधे सड़क मार्ग का निर्माण कार्य जारी है। जिससे भोपावर तीर्थ स्थल की दूरी लगभग 9 कि.मी. रह जायेगी।

भोपावर तीर्थ इन्दौर से लगभग 107 कि.मी. व धार से लगभग 47 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। हाल ही में सरदारपुर से भोपावर तक नवीन सड़क का निर्माण किया गया जिससे इस तीर्थ के लिए आवागमन अत्यंत सुगम एवं सुविधाजनक हो गया है। धार एवं इन्दौर से आने वाले यात्रियों के लिए फुलगाँवड़ी से भोपावर तक नवीन पक्की सड़क जो 5 कि.मी. है, का निर्माण किया गया है जिससे धार से भोपावर की दूरी मात्र 40 कि.मी. व इन्दौर से 100 कि.मी. हो जायेगी।

यह अत्यंत आश्चर्य का विषय है कि इस प्राचीन एवं ऐतिहासिक जैन तीर्थ स्थल वाले ग्राम में जैन समाज का एक भी घर नहीं है। मूलतः यह वनवासी क्षेत्र है। आसपास के गांवों में यहां भील-भिलालों की बस्ती है। गाँव के लोग सहृदय एवं भोलेभाले हैं।

भोपावर प्राकृतिक सौन्दर्य से परिपूर्ण है। यह नगर एवं तीर्थ पुण्य सलिला माही के तट पर यह बसा हुआ है। भोपावर के अत्यंत समीप ही मिण्डा गांव है, जो माही का उद्गम स्थल है। भोपावर की जलवायु समशितोष्ण एवं स्वास्थ्यप्रद है। तीर्थ के चारों ओर हरियाली छाई हुई है। ग्रीष्म ऋतु में भी यह स्थान अत्यंत शीतल

व सुहावना रहता है । यहां वर्ष-भर हरियाली छाई रहती है ।

मन्दिर का मुख पूर्व दिशा में है । जिससे सूर्य की स्वर्णिम रश्मियाँ इस मन्दिर के विशाल प्रवेश द्वार को प्रातः काल से ही स्पर्श कर प्रभु के प्रति आस्था प्रकट करती हैं । मन्दिर के सम्मुख थोड़ी दूर पर ही आम एवं अमरुद के वृक्षों से घिरा एक सुन्दर बगीचा है जिसमें निर्मल जल से युक्त एक बावड़ी है । इस बगीचे में हनुमानजी का अत्यंत प्राचीन मन्दिर स्थित है । भोपावर स्थित जैन तीर्थ स्थल में जैन धर्म के सोलहवें तीर्थंकर भगवान श्री शान्तिनाथजी की भव्य प्रतिमा इस तीर्थ के आर्कषण का केन्द्र है ।



## \* तीर्थ पर आयोजित होने वाले उत्सव \*

किसी भी तीर्थ स्थल पर आयोजित होने वाले उत्सव, हमारी प्राचीन सभ्यता एवं संस्कृति के संवाहक हैं। भोपावर तीर्थ स्थल पर प्रतिवर्ष मुख्य रूप से तीन उत्सवों का आयोजन किया जाता है।

प्रथम उत्सव : श्री पार्श्वनाथ जन्म कल्याणक उत्सव है, जो पौष विदि दशमी को मनाया जाता है। इस अवसर पर त्रिविदितीय (नवमी, दसमी, ब्यारस) महोत्सव का आयोजन किया जाता है। तीन दिनों तक पूजा, रथयात्रा, भगवान की अंगरचना, रात्रि में भक्तिभावना व रोशनी आदि की जाती है, एवं स्वामीवाटसल का आयोजन होता है। सम्पूर्ण भारत वर्ष से दर्शनार्थी पुण्यफल प्राप्त करने हेतु इस उत्सव में आते हैं। इस अवसर पर अनेक लोग अपनी मनोकामनाएँ लेकर आते हैं। और उनकी मनोकामनाएँ पूर्ण भी होती हैं। यहाँ के अधिष्ठायक देव जागृत हैं; वे भी अपना निजी उत्सव यहाँ स्वाते हैं। इस अवसर पर यहाँ पर तीन दिवसीय आकर्षक मेला भी लगाता है; जिसमें हजारों जैन एवं जैनेतर बंधु मेले का आनंद उठाते हैं। मेले में अनेक आकर्षक दुकाने एवं स्वस्थ मनोरंजन के अनेक साधन दूरांचलों से आते हैं। इन दिनों उत्सव में आने के लिए राजगढ़ एवं सरदारपुर नगर से स्पेशल वाहन सुविधा उपलब्ध रहती है।

दूसरा उत्सव : यह होली के दूसरे दिन आयोजित होता है। इस दिन आदिवासी लोग बड़े भक्ति-भावना से मन्दिर में आते हैं तथा भगवान के दर्शन करते हैं। वे मन्दिर की परिक्रमा कर, स्वस्तिक बनाकर अपनी आस्था प्रकट करते हैं।

तीसरा उत्सव : ज्येष्ठ विदि 13 (गुजराती) को मनाया जाता है। इस दिन भोपावर तीर्थ के मूलनायक भगवान श्री शान्तिनाथजी का जन्म कल्याणक एवं मोक्ष कल्याणक महोत्सव अत्यन्त उत्साह के साथ मनाया जाता है।

इसके अतिरिक्त यहाँ पर अनेक उत्सव मनाए जाते हैं। प्रतिवर्ष इस तीर्थ स्थल पर वाहन एवं पैदल संघ आते हैं।

## \* तीर्थ पर उपलब्ध सुविधाएँ \*

भोपावर तीर्थ स्थल उत्तरोत्तर विकास के मार्ग पर अग्रसर है। जहाँ एक शताब्दी पूर्व इस तीर्थ पर व्यवस्थाएँ नगण्य थी, वहीं विगत कुछ वर्षों से तीर्थ ने विकास के नये आयाम स्थापित किये हैं, और इस तीर्थ पर चहुँमुखी विकास हुआ है।

तीर्थ पर ठहरने हेतु एक विशाल नवनिर्मित धर्मशाला है, जो सर्वसुविधा युक्त है। इस धर्मशाला में 20 कमरे हैं जो स्वच्छ, साफ-सुथरे एवं हवादार हैं। संघों के ठहरने के लिए यहाँ 2 विशाल हॉल हैं। यहाँ पर स्वच्छ पेयजल की उत्तम व्यवस्था है। इसके साथ ही राजगढ़ नगर में भी तीर्थ की धर्मशाला है।

मुख्य मन्दिर के बाहर परिसर में एक विशाल उपाश्रय है जहाँ साधु-संत ठहरते हैं। उपाश्रय के बाहर ही श्री शान्तिनाथ जैन श्वेताम्बर ट्रस्ट की पेढ़ी है। साधु भगवंत की वैयावच्च, गोचरी आदि की व्यवस्था है।

इस तीर्थ पर सर्वसुविधायुक्त, अत्याधुनिक एक विशाल भोजनशाला का निर्माण किया गया है। यह भोजनशाला सदैव चालू रहती है। यहाँ व्रतधारियों के लिए 12 माह पीने के गर्म पानी की व्यवस्था उपलब्ध रहती है। भोजनशाला में संघ के आने की अग्रिम सूचना पर विशेष व्यवस्था की जा सकती है। भोजनशाला का नवीन हाल इतना बड़ा है कि इसमें पांच सौ व्यक्ति एक साथ भोजन कर सकते हैं। पूर्व सूचना होने पर आयुंभिल की व्यवस्था भी की जाती है। प्रायः भोजन की सभी तिथियाँ भरी जा चुकी हैं। फिर भी वर्तमान महंगाई को देखते हुए यात्रियों से आर्थिक सहयोग की अपेक्षा है।

तीर्थ स्थल पर अत्याधुनिक एवं सर्वसुविधायुक्त 200 कमरों की एक विशाल नई धर्मशाला निकट भविष्य में बनाने की योजना है।

## \* समीपस्थ तीर्थ स्थल \*

भोपावर तीर्थ स्थल एक अद्वितीय तीर्थ स्थल है। इस तीर्थ स्थल के समीप ह्री मोहनखेड़ा, अमिझरा पार्श्वनाथ, भक्तामर तीर्थ (धार), माण्डवगढ़, हासामपुरा, लक्ष्मणी, तालनपुर, उज्जैन, मवसी, नागेश्वर परासली, बिलड़ौद, सेमलिया आदि हैं।

भोपावर से मात्र 12 कि.मी. की दूरी पर प्रसिद्ध जैन तीर्थ स्थल श्रीमोहनखेड़ा स्थित है। इस तीर्थ स्थल पर आदेश्वर भगवान का मन्दिर एवं राजेन्द्रसूरीजी म.सा. का समाधि स्थल है। समीप ही अत्यंत आकर्षक एवं दर्शनीय म्यूजियम (श्री राज. राजेन्द्र तीर्थ दर्शन) है। जिसमें जैन धर्म, दर्शन, तत्त्व, इतिहास आदि का सुन्दर समन्वय है।

पास ही राजगढ़ नगर में 6 अन्य जैन मन्दिर हैं। हाथीवाला मन्दिर में मूलनायक भगवान महावीर स्वामी की भव्य प्रतिमा है, जो अमझेरा से लाई गई थी; इसी मन्दिर में 22 वें तीर्थंकर भगवान नेमिनाथजी की 1100 वर्ष पुरानी प्रतिमा है। जो बलोला से लाई गई थी। अन्य मन्दिर भगवान श्रीआदेश्वर, श्रीअष्टापद मन्दिर, श्रीशान्तिनाथ भगवान तथा श्रीराजेन्द्रसूरिजी के हैं।

भोपावर से लगभग 30 कि.मी. की दूरी पर अमिझरा पार्श्वनाथ की अत्यंत प्राचीन प्रतिमा है जो 1000 वर्ष प्राचिन बताई जाती है, प्रतिमाजी से कई बार अमि झरणें होते ही रहते हैं इसी वजह से इसे अमिझरा पार्श्वनाथ के नाम से पुकारा जाता है। इस तीर्थ के लिए कहा जाता है -

प्रभु प्रतिमा से अमी झरी, सो अमीझरा कहलाए।

पार्श्व प्रभु की सुन्दर प्रतिमा, श्रद्धा भक्ति जगाए॥

यहां पर अमकाजी-झमकाजी का दर्शनीय मन्दिर स्थित है। इस स्थल पर रुक्मिणी हरण के समय भगवान श्रीकृष्ण के रथ के पहिये के निशान आज भी मौजूद हैं।

भोपावर से लगभग 45 कि.मी. की दूरी पर धार नगर में

भक्तामर तीर्थ अत्यंत आकर्षक है। यह तीर्थ वर्तमान आचार्य पूज्य श्री नवरत्नसागरजी की प्रेरणा से आकार ले रहा है। यहाँ पर प.श्रीअभ्युदयसागरजी म.सा. कि समाधि भी है।

धार जिला मुख्यालय से लगभग 35 कि.मी. एवं भोपावर तीर्थ से लगभग 80 कि.मी. की दूरी पर विश्व प्रसिद्ध पर्यटन स्थल मांडवगढ़ स्थित है। इस ऐतिहासिक नगर में जैन धर्म के 7 वें तीर्थंकर सुपार्श्वनाथजी एवं 16 वें तीर्थंकर भगवान शान्तिनाथजी के अत्यंत प्राचीन मन्दिर हैं। इस तीर्थ के लिए कहा जाता है-

“मांडवगढ़ नो राजीयो नाम देव सुपास”

भोपावर तीर्थ स्थल से लगभग 120 कि.मी. की दूरी पर लक्ष्मणी तीर्थ स्थित है। इस तीर्थ स्थल पर छठें तीर्थंकर व तीर्थ के मूलनायक श्री पद्मप्रभु की 4 फीट ऊँची भव्य प्रतिमा है।

राजगढ़ नगर से लगभग 70 कि.मी की दूरी पर तालनपुर स्थित है। जो प्रसिद्ध जैन तीर्थ स्थल है, यहां पर मुख्य रूप से दो मन्दिर हैं। जिनमें मूलनायक आदिनाथजी एवं गोड़ीपार्श्वनाथजी की प्रतिमा हैं।

उज्जैन में अवन्ति पार्श्वनाथ की श्यामवर्णी प्रतिमा अर्द्ध पद्मासन मुद्रा में स्थित है। मक्सी में मक्सी पार्श्वनाथ, नागेश्वरजी तीर्थ में नागेश्वर पार्श्वनाथ की प्रतिमा, बिम्बड़ौद तीर्थ स्थल में मूलनायक श्री आदीश्वर भगवान की श्यामवर्णी प्रतिमा है, सेमलियाजी तीर्थ स्थल में शान्तिनाथ भगवान की श्यामवर्णी प्रतिमा, श्री परासली में मूलनायक श्री आदिश्वर भगवान की पद्मासन प्रतिमा स्थित है।

## \* तीर्थ के लिए आवागमन के साधन \*

भोपावर तीर्थ स्थल इन्दौर-अहमदाबाद राष्ट्रीय राजमार्ग पर स्थित सरदारपुर से मात्र 6 कि.मी. एवं राजगढ़ नगर से 12 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। तीर्थ यात्रियों को राजगढ़ अथवा सरदारपुर से तीर्थ के लिए तत्काल वाहन उपलब्ध हो जाते हैं। राजगढ़ से बस, टेक्सी, टेम्पो आदि वाहन सुविधा भोपावर तीर्थ के लिए उपलब्ध है।

सीधी गाड़ियाँ यहाँ निम्न समय पर आती हैं--

वसाई-पारा प्रातः 10.30 बजे

वसाई-धार प्रातः 11.00 बजे

धार-राजगढ़ प्रातः 11.30 बजे

धार-राजगढ़ दोप. 12.00 बजे

इसके अतिरिक्त राजगढ़ से धार, इन्दौर, उज्जैन, भोपाल, झाबुआ, दाहोद, बड़ोदा, अहमदाबाद आदि अनेक शहरों के लिए सुगमता से बस उपलब्ध हो जाती है। राजगढ़ नगर से निकटतम रेलवे स्टेशन मेघनगर है जो यहाँ से लगभग 65 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। इस रेलवे स्टेशन से देश के लगभग हर प्रांत के लिए रेल सुविधा उपलब्ध है।

राजगढ़-कुक्षी मार्ग पर स्थित रिंगनोद से भोपावर की दूरी लगभग 7 किमी. है। भोपावर से सरदारपुर के लिए कच्चा मार्ग मात्र 1 मील का है। यहाँ अधिक वर्षा होने पर भी माही पर बाढ़ का पानी 1-2 घण्टे में उतर जाता है।

## \* भविष्य की स्वर्णिम योजनाएँ \*

भोपावर तीर्थ स्थल उत्तरोत्तर विकास के पथ पर अवसर है तीर्थ के ट्रस्टीगण के अथक प्रयास से तीर्थ अपने चरमोत्कर्ष पर हैं। इस तीर्थ के विकास हेतु अनेक भावी योजनाएँ हैं, जो निम्नानुसार हैं -

1. उपाश्रय एवं व्याख्यान के लिए एक बड़ा हाल बनाना।
2. एक अत्याधुनिक 200 कमरों की नवीन धर्मशाला का निर्माण करना।
3. वृद्धाश्रम तथा बोर्डिंग का निर्माण करना।
4. स्वाध्याय केन्द्र खोलना।
5. आविवासियों के लिए निःशुल्क चिकित्सालय खोलना।
6. प्राचीन मूर्तियों का एक संग्रहालय बनाना।
7. साधु-सन्तों के लिए पठन-पाठन का केन्द्र बनाना।
8. यात्रियों की सुविधा के लिए एक नया बस स्टेण्ड तथा यात्री प्रतिक्रियालय बनवाना।
9. गौशाला का निर्माण करना।
10. तीर्थ की शेष भूमि पर वाल बाउंड्री का निर्माण करना।

## \* तीर्थ एवं प्रतिमा का प्रभाव \*

भोपावर तीर्थ स्थल की महिमा अनंत है। इस तीर्थ स्थल पर अनेक ऐसी घटनाएँ हुई हैं, जो इस तीर्थ एवं भगवान शान्तिनाथजी की दिव्य प्रतिमा के प्रभाव को परिलक्षित करती हैं। हम ऐसी ही कुछ घटनाओं का उल्लेख यहाँ पर कर रहे हैं।

संवत् 1972 भाद्रव महीने में मूलनायक भगवान श्री शान्तिनाथजी के मूल गर्भ-गृह में चार दिन तक 15 डिब्बों के लगभग दूध निकला जिसे यहाँ के कर्मचारियों, व्यवस्थापक एवं हजारों नर-नारियों ने प्रत्यक्ष देखा।

संवत् 1990 के आसौज माह में मूलनायक श्री शान्तिनाथजी के पाँव में एक सर्प आकर लिपटकर बैठ जाता था। जब पुजारी प्रक्षाल करने आता था तो उसके करबद्ध विनय करने पर सर्प उसी वक्त वहाँ से निकलकर आगे मणिभद्रजी के यहाँ लिपटकर बैठ जाता था। उस स्थान पर पुनः विनती करने पर सर्प देवता अदृश्य हो जाते थे। यह अद्भूत चमत्कार लगभग एक माह तक लगातार चलता रहा।

संवत् 2026 के ज्येष्ठ माह में मलाड़ मुम्बई वाले सेठ भाठयशाली देवचन्द भाई 600 व्यक्ति का संघ लेकर सम्मैतशिखरजी से भोपावर करीब 10 बजे पधारे। कुछ यात्री पूजा कर रहे थे कि अकस्मात् दोपहर 12 बजे भगवान के मस्तक पर अमृत झरने लगा। पूजन करने वालों ने बार-बार अंगलुणा करने पर भी अमी झरना बंद नहीं हुआ बाद में संघ के यात्री वहीं ठहरे एवं भक्ति-भावना करते रहे।

संवत् 2030 भाद्रवा सुदी 15, बुधवार को भगवान के चरण में केसरिया पानी छुटने तक भर जाता था, उसे पूरा साफ करने पर अगले दिन पुनः पानी भर जाना किसी आलौकिक शक्ति का ही परिणाम हो सकता है। रात्रि में कभी-कभी मन्दिर में, मन्दिर मंगल होने के बाद भी घुँघरुओं की आवाज सुनाई देती है। तब ऐसा प्रतीत

होता है मानो कोई भक्ति भावना कर रहा हो। इस तीर्थ पर कभी-कभी माठ्यशालियों को सफेद सर्प दिखाई देता है तब ऐसा लगता है, मानो अधिष्ठायक देव प्रत्यक्ष रूप से दर्शन दे रहे हों।

तीर्थ यात्रा पर आई एक महिला की सोने की अगुँठी गुम हो गई थी, भगवान से प्रार्थना करने पर वह अगुँठी उसके सामने ही पड़ी मिली। दिनांक 16-12-76 प्रोष विदी 10 को एक जैनेतर भाई श्री ठोबले बाबू की घड़ी गुम जाना और वापस मिल जाना अद्भूत चमत्कार है।

पूर्व संक्षिप्त इतिहास के लेखक श्री शान्तिलालजी सुराणा 16-9-79 को इन्दौर से भोपावर के लिए रवाना हुए। करीब दो बजे ये लोग सरदारपुर पहुँचे ही थे कि यहां मूसलाधार वर्षा प्रारंभ हो गई थी जिससे माही नदी का पूल जलमग्न हो गया तथा पूल पर कमर तक पानी था एवं पानी का बहाव अत्यंत तीव्र था किन्तु उन्होने प्रभु का स्मरण करते हुए पूल सुरक्षित रूप से पार किया।

सन् 1983 के जनवरी माह में दो यात्री बस अहमदाबाद से भोपावर आई। यात्री लोगों ने बहुत धुम-धाम से भगवान शान्तिनाथजी की पूजा की, भक्ति के प्रभाव से दोपहर में प्रभु के मूल गर्भ-गृह में करीब दो घंटे तक प्रभु के मस्तक पर अमृत झरने लगा। गर्भ गृह में घुटने-घुटने तक जल भर गया उक्त चमत्कार अनेक लोगों ने देखे।

## \* एक निवेदन \*

भोपावर तीर्थ स्थल न केवल इस मालवांचल का अपितु इस भारत वर्ष का एक अद्वितीय तीर्थ स्थल है, जहाँ पर भगवान शान्तिनाथजी की 12 फीट उँची काउसठगधारी विशाल एवं भव्य प्रतिमा है। इस तीर्थ स्थल पर विकास की धारा अविरल रूप से बह रही है। तीर्थ अत्यन्त प्राचीन होने के कारण जीर्ण-शीर्ण अवस्था में पहुँच चुका था। अतः इसका जीर्णोद्धार अति आवश्यक था। इस तीर्थ के विकास के लिए आपका आर्थिक सहयोग अपेक्षित है।

सभी सधर्मी बंधुओं से निवेदन है कि इस तीर्थ पर प्रधारकर अपना जीवन सफल बनाएँ तथा मुक्त हस्त से दान देकर अपने धन का सदुपयोग करें। अनेक भाव्यशाली दान दाताओं ने इस तीर्थ के विकास के लिए अपना तन-मन-धन अर्पित किया है।

आज भोपावर की गणना भारतवर्ष के बड़े तीर्थ स्थलों में की जाती है। किन्तु हमारा उत्तरदायित्व यहीं पूरा नहीं हो जाता है। इस तीर्थ के विकास के लिए भविष्य में अनेक योजनाएँ हैं, आपके सहयोग के बिना इन योजनाओं को मूर्त रूप देना संभव नहीं है। अतः यथा शक्ति अपने धन का सदुपयोग करके तीर्थ के विकास में भागीदार बनें।

यह तीर्थ ग्रामीण अंचल में स्थित है अतः इस क्षेत्र में संसाधनों का अभाव होना स्वाभाविक है ; इसके बावजूद इस मन्दिर के ट्रस्ट मण्डल ने तीर्थ की व्यवस्था पूर्णरूपेण समर्पित होकर संभाली हैं किन्तु फिर भी कुछ त्रुटि रह जाना स्वाभाविक है। यदि आपको कहीं कोई त्रुटि या अव्यवस्था लगे तो आप उदारता पूर्वक हमें क्षमा करें। यह तीर्थ सभी जैन भाईयों का है व्यवस्थापक या ट्रस्टीगण तो संघ एवं तीर्थ के सेवक मात्र हैं। मुनिराज भगवंतो से भी इस तीर्थ पर प्रधारने के लिए आत्मीय निवेदन है क्योंकि उनकी वाणी में वह आलौकीक एवं दिव्य शक्ति है जिससे तीर्थ का यशोगान सम्पूर्ण विश्व में हो सकता है। यह तीर्थ और अधिक समृद्ध हो एवं यहाँ उत्तरोत्तर विकास हो, इस हेतु आपके सुझाव सावर आमंत्रित है।

\* अन्वर्ध ग्रन्थ-सूची \*

1. भारतीय संस्कृति में जैन धर्म का योगदान  
- डॉ हीरालाल जैन
2. तीर्थंकर चरित्र भाग-1  
- रतनलाल डोसी
3. श्री शुक-सुधा-सागर (महाभारत का हिन्दी रुपांतरण)  
- वेदव्यास
4. संक्षिप्त शिवपुराण  
- सं. हनुमानप्रसाद पोद्दार
5. पूर्व लिखित भोपावर का संक्षिप्त इतिहास  
- शान्तीलाल सुराणा
6. श्रीमद् भागवत गीता  
- श्री श्रीमद् ए.सी. स्वामी प्रभुपाद
7. रामचरित-मानस  
- गोस्वामी तुलसीदास
8. शंकराचार्य  
- ने. सुक ट्रस्ट इण्डिया
9. संस्कृति के चार अध्याय  
- रामधारी सिंह दिनकर
10. प्रथम प्रश्न परिमल  
- मुनि वैराग्य रत्न सागर 'विभोर'
11. तीर्थ दर्शन  
:- पन्नालाल वैद

श्री शोपाबट तीर्थ के सम्पूर्ण जीर्णोद्धार में लाभ लेने हेतु आप  
निम्न स्थानों पर सहयोग राशी जमा करवाकर पुण्यार्जन करें।

ट्रस्ट आयकर अधि. धार 12-ए के अन्तर्गत प्रदत्तदान  
आयकर विधान की धारा 80-जी के अनुसार आयकर से मुक्त है।

स्टेट बैंक ऑफ इन्डोए शाखा राजगढ़  
राजगढ़ जि.धार (म.प्र.)

शाखा कोड नं. 3046, खाता नं. 50105

स्टेट बैंक ऑफ इन्डोए शाखा बेंगलोर  
48 जर्नलिस्ट कॉलोनी

दूसरा माला, जे.सी. रोड़, बेंगलोर  
शाखा कोड नं. 3222 खाता नं. 50167

स्टेट बैंक ऑफ इन्डोए शाखा सुरत  
सूर्य सृष्टी, सब जेल के पास  
चार रास्ता रिंगरोड़, सुरत

शाखा कोड नं. 3275 खाता नं. 01000050483

स्टेट बैंक ऑफ इन्डोए शाखा अहमदाबाद  
आश्रम रोड़, रानी हार्ड कोर्ट के पास  
अहमदाबाद (गुजरात)

शाखा कोड नं. 3217 खाता नं. 01000050305

स्टेट बैंक ऑफ इन्डोए शाखा कोलकाता  
कॉटन स्ट्रीट

161, सी.आर. एवेन्यू, कोलकाता  
शाखा कोड नं. 3266 खाता नं.

स्टेट बैंक ऑफ इन्डोए शाखा भुलेश्वर, मुंबई

बिल्डींग नं. 2 बी, जयहिन्द स्टेट

डॉ.ए.एम रोड़, भुलेश्वर मुंबई-2

शाखा कोड नं. 3001 खाता नं. 50541

स्टेट बैंक ऑफ इन्डोए शाखा - चेन्नई  
ओरिएण्टल हाउस  
115 ब्राडवेज, चेन्नई  
शाखा कोड नं. 3220 खाता नं. 50551

---

स्टेट बैंक ऑफ इन्डोए  
शाखा - इन्दौर  
37, सीतलामाता बाजार  
गोराकुण्ड, इन्दौर (म.प्र.)  
शाखा कोड नं. 3020 खाता नं. 01000051431

---

स्टेट बैंक ऑफ इन्डोए शाखा - नई दिल्ली  
एम.94 सुपर बाजार के सामने  
नई दिल्ली  
शाखा कोड नं. 3203 खाता नं.

---

बैंक ऑफ इण्डिया शाखा - रिंगनोद  
रिंगनोद (धार) म.प्र.  
शाखा कोड नं. 3813

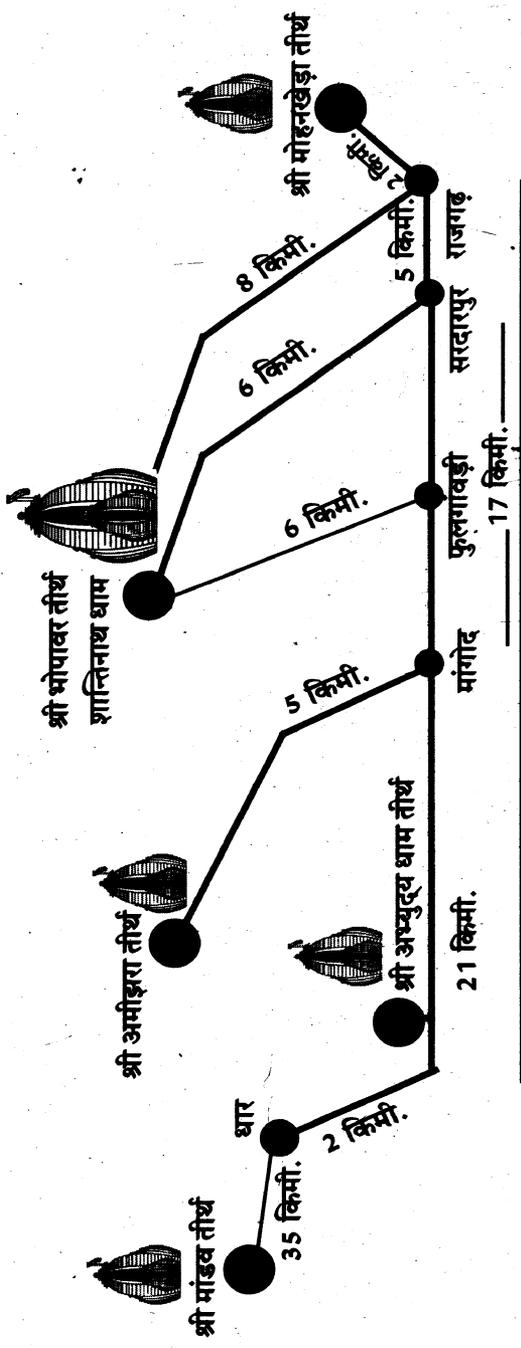
---

बैंक ऑफ महाराष्ट्र शाखा - राजगढ़  
राजगढ़ (धार) म.प्र.  
शाखा कोड नं. 1053-03

---

आपके द्वारा उपरोक्त किसी भी शाखा में श्री शान्तिनाथ जैन  
श्वे.मन्दिर ट्रस्ट, भोपावर के नाम से जमा करवाई गई सहयोग  
राशि बैंक द्वारा भोपावर तीर्थ को ट्रांसफर हो जावेगी। कृपया सहयोग  
राशि जमा करवाकर भोपावर महातीर्थ को सूचना अवश्य भेजें ताकि  
आपको रसीद भेजी जा सके।

कृपया सहयोग राशी किसी भी व्यक्ति को नगद न दें। सहयोग  
राशि किसी बैंक में ही जमा करावे या ड्राफ्ट द्वारा ही भेजें।



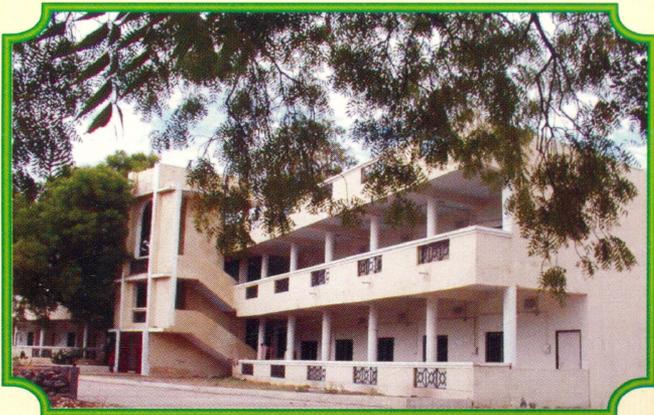
17 किमी. —————  
 इन्दौर-अहमदाबाद रोड



ડવાશ્રય



શોજનશાલા



ધર્મશાલા

